॥ रगक्राति मे एक साथक भूमिका—मौजूदा राजनीति के भयावह और असगत प्रसगा की खुली पडताल करता हुआ एक खुला नाटक—जो दशक को खुलकर हँसन और खुलकर सोचने का 'समय दता है ॥



निधि प्रकाशन
1, असारी रोड, गली न० 1, नई दिल्ली 2

बोलो बोधिवृक्ष

मणिमधुकर



ISBN 81 85222 12 6

मूल्य रु० 35 00

प्रथम संस्करण 1991

प्रकाशक

लिपि प्रकाशन
1/4232, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली 110002

मुद्रक तरुण प्रिंटर्स दिल्ली 32

BOLO BODHIVRIKSHA
Play by Mani Madhukar

।। नाटककार से रग-सवाद ।।

मणि मधुकर के साथ महेश आनन्द और दवेन्द्रराज अकुर की भेंटवार्ता के कुछ अश नटरग 50 52 से साभार।

सफेद मेमने (उपन्यास), हवा मे अकेले (कहानी सग्रह) एव खड खड पाखडपव (कविता-सग्रह) के बाद रसगधव (नाटक) लिखने के पीछे क्या चुनौतियाँ थीं ?

नाटक लिखने के पीछे अन्दर की माँग थी। लेखन के शुरूआत के दिनो मे यह विचार मन पर हावी रहा कि कविता मे अपने एकान्त की रक्षा हो सकती है। आप अपने को सम्बोधित करके कुछ कहना चाहत हैं। अपने को सम्बोधित करते हुए आप दूसरो से कुछ कहना चाहते हैं। किन्तु अपने दायरे तक रहकर या अपने से कहकर ही आप सन्तुष्ट नहीं हो सकते और ऐसी दुनिया की ओर आ जाते है जो अधिक ठोस है। इसमे एकात से बाहर निकलने की और दूसरे लोगो के भीतर जाने की एक प्रक्रिया शुरू होती है, और कुछ चीजो के प्रति आप बहुत तीखेपन से प्रतिक्रिया भी व्यक्त कर सकत हैं। यहाँ आपको लगता है कि यह आपकी प्रतिक्रिया सिर्फ आपकी ही नहीं, बल्कि दूसरे लोगो की भी होनी चाहिए। इस तरह आप चीजो को जाँचत हैं, परीक्षण करत हैं।

इस तरह के कई सवाल शुरू मे रह। खास तौर पर सफेद मेमने उपन्यास लिखन के बाद मेरे मन मे कुछ और बातें आयी। इस रचना के बारे म कहा गया है कि इसमे लेखक बहुत अन्तर्मुखी हो गया है। असल मे यह उपन्यास रेगिस्तान की जिन्दगी से जुडा हुआ है। इसम जो लोग हैं वे अपने चारो तरफ के माहौल के कारण अन्तर्मुखी हैं—मेरी वजह से

नही। यही मुझे लगा कि अगर आपको बहुत लोगो के साथ साझेदारी करनी है तो कविता, कहानी या उपन्यास म बात बनने वाली नही। आपकी बहुत सीधी जिम्मेदारी इनमे नही हो सकती। अगर कोशिश करते है, तो कहा जाता है कि कहानी या उपन्यास की स्थितियो से अलग होकर लेखक हावी हो गया है। कविता मे आप बहुत अधिक मुखर होते है, तो कहा जाता है कि कविता सपाटबयानी म तल्लीन हो गयी है। यह एक आरोप लगा दिया जाता है। आप जो साफ बात कहना चाहते हैं उसे बिम्बो और छवियो म उलझाकर कह, यह अपने मे विरोधाभास है। मुझे लगा कि अपने कवि कहानीकार या उपन्यासकार को सँभालकर रखते हुए नाटक लिखना चाहिए। यही मैंने रक्तबीज की शुरूआत की। इसम कविता है। फिर भी यह पूरी तौर पर एक नाटक ही है। इसका कथात्मक स दभ उतना ही है जितना मेरे नाटककार की जरूरत है।

ब० व० कारत की प्रस्तुति की सफलता के बाद मेरा हौसला बढा कि इस दिशा म कुछ किया जा सकता है। नाटक म आप कविता और कथा के अलावा बहुत कुछ लिख सकते है, क्योकि नाटक म आप पूरी जिन्दगी को लोगो के सामने पेश करते ह। यह जिन्दगी अन्य विधाओ मे अधूरी रहती है। उनम लोगो की सीधी प्रतिक्रिया आपको नही मिलती। आपने जो लिखा है उसम आप कहा सही या गलत ह और कहा उलझ गये है, यह आप नही जान सकते। लेकिन नाटक म दर्शक आपको ठीक जगह पर पकड लेता है—वह खुलकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। यह बहुत बडी चीज है जो नाटक म मिलती है। इसलिए म मूलत अपने को नाटककार ही मानता हूँ। वस भी मेरी कविताओ कहानियो या उपन्यासो पर नाटकीयता का आरोप लगता रहा है। मेरी कहानियो के सवाद सपाट हो जाते है—ऐसा कहा जाता रहा है। वस्तुत व सपाट नही है बल्कि जिस तरह से हम रोजमर्रा की जिन्दगी म बोलते है उसी तरह है। मैं सवाद रचता नहीं, बोलता हूँ।

जब आपने नाट्य लेखन की शुरुआत की तब हिन्दी रगमच की क्या स्थिति थी ?

हिन्दी रंगमंच को लेकर मुझमें झुंझलाहट रही। खास तौर पर राकेश के नाटकों को लेकर। आषाढ़ का एक दिन को अलग रखना चाहता हूँ। लहरों के राजहंस और आधे-अधूरे नाटकों से ऐसा लगता है कि मानो किसी उपन्यास का नाट्यान्तर किया गया है। लहरों के राजहंस में राकेश ने आषाढ़ का एक दिन को दोहराया है। बस इन दोनों नाटकों को उन्होंने आधे अधूरे में दोहराया है। मुझे लगा कि स्त्री पुरुष सम्बन्ध या संवेदना के धरातल पर—एक बड़ी गलत दिशा में हिन्दी नाटक जा रहा है और इसकी प्रशंसा भी हो रही है। यही दौर कहानियों में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की व्याख्या करने का था। इस तरह की कहानियों की दुनिया बड़ी आत्म-केन्द्रित थी। कविताओं में इस दुनिया को धर्मवीर भारती और कुंवर-नारायण ने अच्छी तरह से रखा था। किन्तु जब नाटक में यह सब हो रहा था तो मैं सोचने लगा कि इन नाटकों को देखकर दर्शक क्या लेकर जाते होंगे। क्या ये नाटक उनकी दुनिया में शामिल होते हैं, अथवा इन नाटकों के चरित्रों, संवादों या स्थितियों में दर्शकों को अपनी दुनिया नज़र आती है? औरों की बात छोड़िये, मुझे अपने बारे में लगा कि मैं इन नाटकों के लिए बेहद पराया दर्शक हूँ।

जब एक नाटक मंच पर आकार ले रहा होता है तो उसकी तमाम खूबियाँ, कमजोरियाँ तेज़ी से आक्रमण करती हुई आपके सामने उजागर हो जाती हैं। जब मोहन महर्षि ने जयपुर में आषाढ़ का एक दिन प्रस्तुत किया तो उसे देखकर लगा कि हम बहुत खाली होकर बाहर निकले हैं। मुझे नहीं पता कि मोहन महर्षि क्या सोचते हैं किन्तु मेरे मन में यह बात आती रही। आषाढ़ का एक दिन की जिस तरह व्याख्याएँ हो रही थीं, उससे ऐसा नहीं लगना चाहिए था। ऐसा क्या लगा? हमने खोजना शुरू किया तो महसूस हुआ कि जो कुछ लेखक ने रचा है, और निर्देशक जिसकी पुनर्रचना कर रहा है—इन दोनों के साथ हम अपना तालमेल नहीं बैठा पा रहे हैं। ये चीज़ें हमारे भीतर नहीं उतर रहीं। हम कालिदास के वक्त के वातावरण की भव्यता को मंच पर लाकर अपने दर्शक को चमत्कृत तो करना चाहते हैं और संवादों से उद्वेलित भी करना चाहते हैं, किन्तु यह सब तो रंगमंच नहीं है। यह नाटक हमारे भीतर जागता और चलता नहीं

है। शायद यही कारण था कि स्वय मोहन महर्षि ने इसके बाद ज्ञानदेव अग्निहोत्री का शुतुरमुर्ग उठाया। आषाढ़ का एक दिन से एकदम विपरीत, बहुत बोलने वाला नाटक। आषाढ़ का एक दिन जितना चुप किस्म का नाटक था, अन्दर की तरफ जाने वाला नाटक था, शुतुरमुर्ग उतना ही बाहर निकलकर सडक पर आने वाला नाटक था। इसके बावजूद उसका हास्य-व्यग्य केवल प्रदशन के समय तक रहने वाला लगा। सतही या अखबारी टिप्पणिया करन वाला लगा। हमे लगा कि यह व्यग्य हमारी जि दगी के अथ मे शामिल नही होता। जिन चीजो को हम तोडना चाहते हैं, या जिनके खिलाफ हम खडे होना चाहते हैं, उनके विरोध के लिए यह नाटक औजार नही बन सकता।

यहाँ एक प्रश्न उठता है कि इन दो तरह के या दो ध्रुवो वाले नाटको से आप अपने नाटयलेखन मे किन स्तरो पर अलग हुए ? क्या कोई तीसरा मौडल भी आपके सम्मुख रहा ?

वास्तव म मुझे राजस्थान सगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष देवीलाल सामर के लोक रगमच सम्बन्धी काय न प्रेरणा दी। उनका कठपुतलियो और मेवाड के रासधारियो पर महत्त्वपूण काय था। उन्होंने मुझे नये प्रयोगो के लिए जोधपुर मे रगशिविर लगान को कहा। मैं स्वय राजस्थान के लोक नाटय रूपो के पारम्परिक सगीत का आधुनिक सवदना मे इस्तेमाल करना चाहता था। सवादो को सगीत मे प्रस्तुत करन और उनके भीतर कविता को उभारने का रास्ता मैं ढूढ रहा था। इस शिविर से पहले जयपुर मे अखिल भारतीय कत्थक समारोह हो चुका था। इसम सभी जानकार गुरुओ न कत्थक क प्रत्येक अग पर महत्त्वपूण व्याख्यान दिये। यही स मैं सोचने लगा कि कत्थक को नाटक म उम्दा इस्तेमाल किया जा सकता है। या कि उगमराज क कुचामणि ख्याल का कस नया रूप दे सकत हैं। मुझे इनके ख्याल म शास्त्रीय नियमबद्धता नजर आयी। उनमे उतनी ही छूट है जो एक कलाकार की अपनी रचनात्मक उपज हो सकती है।

जो कुछ मेरे पास था, उसे परखने के लिए 1970 के आस-पास **फूल, मोमबत्तियाँ और टूटे सपने** शीर्षक से मैंने हिंदी के महत्वपूर्ण कवियों की रचनाओं को मंच पर पेश किया। ख्याल, माच, नाचा, रास-धारियों के संगीत और लंगा गायकी का इस्तेमाल किया। इन्हीं लोक नाट्यों से प्रेरणा मिली कि कविता में जहाँ एक नोट पर आकर शब्द हमारा साथ छोड़ देते हैं, वहां से हम बिना शब्द के एक लय को बुनते हुए संवेदना के सही नतीजे तक पहुँच सकते हैं। कविता के अर्थ को बड़ा और ज्यादा असरदार बना सकते हैं। रसगन्धर्व लिखने के पीछे यह सारी बेचैनी थी। इस नाटक में राजकुमारी द्वारा कविताएँ बोलते हुए उसके पद-संचालन में मैंने कत्थक के इस्तेमाल की परिकल्पना की है। ब० व० कारंत ने अपनी प्रस्तुति में यक्षगान का इस्तेमाल किया। बुलबुलसराय में मैंने इसी से प्रेरणा लेकर संवाद गति के साथ कुछ कुछ यक्षगान का इस्तेमाल किया। मायासुर की परिकल्पना यक्षगान से ही प्रेरित है। बैंगलूर में तीन सप्ताह रहकर मैंने यक्षगान को जानने-समझने की कोशिश भी की थी।

क्या नाटक लिखते समय कोई दर्शक निर्देशक या रंगमंडली आपके सामने रहे ?

मेरे सामने कोई निर्देशक नहीं था। कौन मेरा नाटक करेगा, कुछ निश्चित नहीं था। मैंने स्वयं सुरुयाणी ख्याल में दो पुराने राजस्थानी नाटक किये। एक तरह से मैंने इनका निर्देशन नहीं किया, बल्कि सीखने के लिए ऐसा किया था। फिर भी जैसा भी मैं निर्देशक था, नाटक लिखते समय मेरा निर्देशक ही मेरे सामने रहा। हाँ, बुलबुलसराय लिखते समय कारंत जी मेरे सामने जरूर रहे। मेरे नाटकों में सारी नाट्य रूढ़ियाँ, पद्धतियाँ राजस्थानी लोकनाट्य परम्परा की हैं। किंतु राजस्थान के लोक रंगकर्मी मेरे नाटक नहीं कर सकते क्योंकि वे मेरी भाषा के साथ एकमेक नहीं हो सकते। इसलिए नाटक लिखने के बाद के संशोधन मैंने निर्देशक की हैसियत से किये। मैं मानता हूँ कि नाटक का मूल आलेख ही नाटककार का होता है, बाकी नाटक सब मिलकर रचते हैं। इसलिए

खेलने के बाद यह नाटक निर्देशक और रंगकर्मियों का हो जाता है। नाटक अकेले नाटककार की सम्पत्ति नहीं है। इसलिए जब कोई बिना अनुमति लिये मेरा नाटक खेलता है तो मुझे गुस्सा नहीं आता।

क्या रसगंधर्व का कोई नाट्य पाठ हुआ था? उसकी दर्शक पाठकों और आप पर क्या प्रतिक्रिया रही?

इस नाटक का पहला नाट्य-पाठ बहुत निराशाजनक था। मेरे साथियों की प्रतिक्रिया थी कि मैंने गलत दिशा चुन ली है। उन्होंने कहा कि मैं सिर्फ कहानियाँ या कविताएँ लिखूँ, और अगर नाटक ही लिखना है तो काव्य नाटक लिखूँ। वास्तव में जयपुर के रंगकर्मियों के सामने भारती का अंधा युग था। एक बार नेमिजी किसी परिसंवाद के सिलसिले में जयपुर आये और उनसे इस नाटक के बारे में बातचीत हुई। फिर उन्होंने ही यह नाटक कारंत जी को दिया। जब यह भोपाल में खेला गया तो काफी सफल रहा। इस नाटक के मंच पर आने के बाद मुझे काफी बल मिला। फिर तो यह नाटक मेरे ही राजस्थानी अनुवाद में भी कई बार खेला गया।

इस नाटक की पहली प्रस्तुति के बाद आपकी क्या प्रतिक्रिया या अनुभव रहे?

नाटक देखने के बाद मुझे लगा कि मैं लोगों के बीच उनके अनुभवों को कितना दूर तक ले जा सकता हूँ। कारंत जी की प्रस्तुति से मुझे लगा कि पूरे दृश्य को—पूरे दृश्य के बीच चलती हुई चीजों को—कैसे पकड़ा जा सकता है, कैसे अपनी गिरफ्त में लिया जा सकता है। यह हम सिद्ध नहीं करना है किन्तु चीजों को ऐसे प्रस्तुत करना है कि वह अपने आप लोगों के भीतर सिद्ध होने लगे या लोगों के भीतर बोलने लगे। निर्देशक ने मेरे नाटक के काव्यात्मक अंशों का भी विस्तार दिया। यह विस्तार कारंत जी की अपनी दृष्टि का परिणाम था। एक कविता-संगीत की समझ रखने वाले व्यक्ति की दृष्टि का। वस्तुत यह पहली प्रस्तुति एक शुद्ध दर्शक की तरह देखी। मुझे लगा कि क्या मैं सचमुच ऐसे दृश्यों का भागीदार रहा हूँ

था मैं ऐसा सोचता रहा हूँ ? चूंकि इस नाटक को लिखे एक साल हो चुका था मैं बाहरी स्तर पर लगभग भूल चुका था उसे। इसलिए भी मैं अपनी पहली प्रस्तुति को दर्शक की तरह आलोचनात्मक और तनावपूर्ण ढंग से साथ देख सका।

आपके नाटकों की जितनी प्रस्तुतियां हुईं उनकी व्याख्या को लेकर किसी निर्देशक से असहमति हुई ? इस सवाल को दूसरी तरह से रखें तो एक निर्देशक को मूल नाटक में परिवर्तन करने या भिन्न व्याख्या करने की कितनी छूट मिलनी चाहिए ?

मुझे सारे निर्देशक अच्छे मिले। मैं निर्देशक को एक समानान्तर रचनाकार मानता हूँ। मूलतः एक आलेख होता है, उस पर रंगकर्मी काम करते हैं तो वह नाटक बनता है। इसलिए मेरा किसी निर्देशक से विवाद नहीं रहा। मेरा नजरिया अलग हो सकता है। खेला पोलमपुर में राजस्थानी लोक रीतियों का सांगीतिक समावेश है। दिल्ली में राजिन्दरनाथ ने उसे किया। राजिन्दरनाथ एक हद तक लोकधर्मी परम्परा को मानते हैं, किन्तु उन्होंने दूसरी तरह के नाटक ज्यादा किये हैं। उन्होंने इस नाटक को दिल्ली के दर्शकों के लिए लोकनाट्य परम्परा को अपने नजरिये के साथ पेश किया और इस कोशिश में वे सफल रहे। हर शहर का दर्शक कुछ अलग होता है और उसे नाटक से जोड़ने के लिए निर्देशक को व्याख्या करने और मंचन शैली के चुनाव की छूट देनी चाहिए।

एक समय के बाद जब आप अपने नाटक पढ़ते हैं तो क्या आपको लगता है कि इनमें सुधार की गुंजाइश है ?

नाटक कोई उपन्यास नहीं है कि उसमें संशोधन करना उचित नहीं। स्थितियां के बदल जाने के साथ साथ कई चीजों के साथ हमारे सम्बन्ध भी अलग हो जाते हैं। इसलिए इनके साथ नये सम्बन्ध बनाने जरूरी हैं। तब नाटकों में परिवर्तन जरूरी लगता है। रसगन्धर्व में कुछ स्थलों के साथ जो व्यंग्य है वह तात्कालिक विसंगतियों से उभरता है। अब ये स्थितियाँ बदल गयी हैं, इसलिए इस नाटक में बदलाव जरूरी है। शेष नाटकों में

इतनी सामयिक प्रत्यक्षता नहीं है। दूसरी ओर, रसगन्धर्व एक चलता हुआ, कभी न खत्म होने वाला नाटक है। इसलिए इसका कोई आलेख एकदम अंतिम नहीं हो सकता।

आपके नाटक लिखने की क्या प्रक्रिया है ?

कुछ चीजें मुझे बेचैन करती हैं, उद्विग्न करती हैं, तो कुछ चरित्र मेरे सामने आते हैं। यहाँ मैं चरित्रों को लेकर संवाद लिखता हूँ। पहले प्रारम्भ में सिर्फ चरित्र और संवाद होते हैं। इन संवादों में कुछ बातें मैंने कही हैं और कुछ बातें और लोगों ने कही है। इन्हें बाहर की दुनिया के लिए जिस रूप में रख सकते हैं, इस कोशिश में प्रस्तुति के कुछ कोण खड़े हो जाते हैं। फिर अभिनय और संगीत के मोड़ आते हैं और बाद में कुछ अन्य चीजें। मेरे नाटकों के बीच बीच में संवाद अक्सर कविता के रूप में आते हैं। जब कोई घटना आकार लेती है तो लगता है अचानक कोई कहानी शुरू हो गयी है फिर वह अचानक खत्म भी हो जाती है। संवाद चल रहे होते हैं तो कहानी के फिर जीवित होने की उम्मीद बनती है। यह ढाँचा सिर्फ कविता ही रच सकती है। इस प्रक्रिया से अधिक गहरी प्रक्रिया रंगकर्मियों के साथ बैठकर शुरू होती है। यही नाटक की सही रचना प्रक्रिया है। इसमें कुछ चीजें रंगकर्म की दृष्टि से जुड़ जाती हैं और कुछ फैल जाती हैं।

आपने जितने भी नाटक लिखे वे सभी लोककथाओं पर आधारित हैं। क्या ऐसा भी कोई नाटक है जो इनसे अलग हटकर है ?

मेरा यह मानना है कि अगर रंगमंच या नाटक को लोक में जुड़े रहना है तो हमें उसे लोक परम्परा से जोड़कर रखना होगा। अन्य विधाओं में मुझे इतनी जरूरत महसूस नहीं होती। किन्तु जब मैं नाटक पर काम कर रहा होता हूँ, तो यह तलाश करता हूँ कि वे कौन-सी चीजें हैं जो लोगों को आसानी से और झटके के साथ झकझोर सकती हैं और उन तक पहुँच सकती हैं। मैंने अपने नाटकों में संस्कृत की नाट्य रूढ़ियों पर 'हमला' किया है। मैंने नहीं किया बल्कि लोकधर्मी रंग-परम्परा से

करवाया है। संस्कृत नाटकों की दुनिया अब वैसी प्रासंगिक नहीं है। वह संसार हमारा नहीं रह गया है। वह बनावटी-सा लगता है। मुझे लगता है कि चाहे वीडियो आ जाय या टी० वी०, किन्तु हमारी लोकधर्मी परम्परा नहीं मरेगी, हम अपनी कहानी को उस तरह जरूर कहेंगे। मैंने उन्हें अपने समय के साथ लिया है। ये वे जड़ें हैं जहाँ से मेरे नाटक निकले हैं, जहाँ से मैंने रस ग्रहण किया है।

किन्तु आप इस परम्परा के साथ जिस प्रकार 'ऐब्सर्ड' मुहावरे का इस्तेमाल करते हैं, क्या वह आधुनिक जीवन को अभिव्यक्ति देने के लिए या आज के फैशन के तौर पर ?

हमारे यहाँ कई लोककथाएँ ऐसी हैं जिनका नाट्यान्तर कर दें तो उनमें 'ऐब्सर्ड' मुहावरा नज़र आयेगा। यह विसंगतिवादी मुहावरा हमारी जिंदगी का हिस्सा है। राजस्थान के कुचामणी ख्याल इसी तरह के हैं। पिंटर या एल्बी की तुलना में उगमराज के नाटकों में विसंगतिवादी तत्व अधिक मौजूद हैं। अगर आप उनके नाटकों के कुछ ग्राह्य अंश राजस्थानी में करें तो वे लोग कहेंगे इस तरह के बहुत सारे नाटक उगमराज ने किये हैं। उगमराज के नाटक जहाँ बहुत गहरी मार करते हैं एक बेपर्दा बेचैनी पैदा करते हैं। यह सुविधा राजस्थानी भाषा में है और मैंने उन्हें हिन्दी में लाना चाहा है।

आजकल पारम्परिक नाट्य रूपों का इस्तेमाल हो रहा है किन्तु एक वर्ग इस पर कटु प्रहार कर रहा है। उनके अनुसार ये प्रयोग प्रतिक्रियावादी तत्व लाकर दर्शकों को अन्धविश्वासों की ओर धकेल रहे हैं।

सभी कुछ ऐसा नहीं है। इसमें कोई शक नहीं कि ये रूप राजे-रजवाड़ों के सामन्ती तरीकों और कई निरर्थक अनुष्ठानों को लाते हैं। मैं इन्हें ज्यों-का-त्यों करने के पक्ष में नहीं हूँ। हम इनमें से वे चीज़ें चुनें जो हमारी जिन्दगी का हिस्सा बन सकती हैं। यह सोचकर कि इन चरित्रों के भीतर से आज का व्यंग्य निकालना मुश्किल है, कुछ लोग अनुष्ठानों या उन तत्वों की भरमार कर देते हैं जो दर्शक को कहीं नहीं ले जाते। ज़रूरत है पुरान

विश्वासो को तोडकर नयी रग-चेतना का धरातल बनाने की।

आजकल नुक्कड नाटक का काफी प्रचार हो रहा है। यह कहा जा रहा है कि यह रगद्वारी मच का विकल्प है। केवल यही रूप दर्शको को सजग कर सकता है।

नुक्कड नाटक की सीमाएँ बहुत स्पष्ट है। वह एक बिंदु से आगे नहीं जा सकता है। इसमे बहुत बोलकर सीधे सीधे कह सकते है। कलाकारो ने कुछ बातें कह दी रच दी, और उन्हे दर्शको ने सुना और चल दिये। नुक्कड नाटक मे ये सब चीजे खुली हुई है और यही खुलापन उसकी सीमा है। मच पर जब आप नाटक करेंगे तो नाटक आपके भीतर उतरेगा। यह स्थिति नुक्कड नाटक मे नही आ सकती। इसमे छोटी छोटी तेज टिप्पणियाँ हो सकती है। इन नाटको को आप मच पर नही खेल सकते जबकि कुछ मचीय नाटको को आप नुक्कड नाटक बना सकते है। चडीगढ म धन्नी ने रसगन्धर्व को नुक्कड नाटक के रूप मे खेला और सफल रहा। मैंने भी 1966-67 मे नुक्कड नाटक किये हैं। जुगलबन्दी छोटे बडे, आलो का आकाश, सलवटो मे सवाद जैसे नुक्कड नाटक लिखे भी। दोनो तरह के नाटको का अन्तर गहराई से जानना जरूरी है।

किन्तु आपने बडे नाटको मे कहीं भी प्रत्यक्ष या सीधी लडाई लडने का सकेत नहीं दिया। सब कुछ अमूत सा होता चलता है।

अगर मुझे प्रत्यक्ष और सामयिक लडाई लडनी होगी तो मैं नुक्कड नाटक लिखूगा। जब मुझे इस लडाई को बहुत दूर तक ले जाना होगा, उसे एक समय के छोटे अश से आगे फैलाकर दीर्घता मे उतारना होगा, तो मैं बुलबुलसराय जैसा नाटक लिखूगा।

आपको अपना कौन-सा नाटक अच्छा लगता है?

मुझे बुलबुलसराय अच्छा लगता है। शेष नाटको मे सारी बावली अच्छा लग रहा है। बुलबुलसराय इसलिए अच्छा लगता है कि निर्देशको ने इसकी तमाम सम्भावनाओ को तलाश नही किया। यह साम्राज्यवाद

और शोषण के खिलाफ एक स्वर है। हर आदमी के अपने भीतर एक तानाशाह है, जो बडा भयावना, क्रूर और निलज्ज है। हम हर रोज मानवीय सम्बन्धो की बात करते हैं, किन्तु हमारे भीतर जो मायासुर बैठा हुआ है, उसे नहीं पहचानते। इन सम्भावनाओ को प्रदशन मे आना चाहिए था। इसलिए यह नाटक करने की इच्छा होती है।

गम्भीर नाटक लिखते लिखते आपने दुलारीबाई भी लिखा। आलोचको ने इसमे ढेर सारे अथ निकाल दिये हैं। यहाँ तक कि दुलारीबाई के जूतो को सामन्तवाद का प्रतीक मान लिया है। आपके क्या विचार हैं ?

ये सारे अथ निकालने की कोशिश बुरी नहीं है। वे प्रदशन की समीक्षा करने वालो ने देखे होंगे। मैंने तो कुछ चीजो और स्थितियो का एक कार्टून बनाया है। जब हम बुलबुलसराय जैसा नाटक लिखते हैं तो हमारा यह मन भी होता है कि हलका फुलका नाटक लिखें। यह हमारे रग-जीवन का हिस्सा है। यह कलकत्ता मे लिखा था और वहीं के कलाकारो ने लिखवाया था। इसीलिए अच्छा लिखा गया। वैसे सिर्फ एक ही तरह के नाटक लिखना जरूरी नहीं है। सिर्फ स्त्री पुरुष सम्बन्धो को लेकर तो नाटक नहीं लिखे जा सकते। न ही हम हर वक्त गम्भीर बने रह सकते हैं। दुलारीबाई मे उतनी ही गम्भीरता है जितनी एक सीधे सादे लोकनाटक मे होती है।

रसगन्धव नाटक के शीषक का क्या अथ है ? क्या इसका स्थितियो से कोई सम्बन्ध है ?

इस शीषक मे एक व्यग्य है। यक्ष, परियाँ, गन्धव लोक-नाटको मे आते हैं और रस सस्कृत नाटको मे। सस्कृत के 'रस' शब्द से मुझे बडी चिढ रही है। वह एक मायावी छद्म लगता है। इसीलिए मैंने विसगति पैदा करने के लिए 'रस' उठाया है। गन्धर्वो की उपस्थिति का एक अभिप्राय है। इसलिए मै गन्धव को शब्द नहीं कहता, वे पात्रगत स्थितियाँ हैं। कई गन्धव स्थितियाँ हैं। उनका सघष है अपनी पहचान बनाने का। इस नाटक मे लोक रगमच और सस्कृत रगमच का भी सघष है। गन्धव

कलाकारों को पुराने पिंजरे से मुक्ति चाहिए। सम्कृत नाटक एक खास अभिजात वर्ग का प्रतीक बन गया है। मैंने सोच समझकर नाटक का शीर्षक रसगन्धव रखा। जयपुर के केन्द्रीय कारागार के कैदियों को मैंने नजदीक से देखा। किसी हत्यारे की जिन्दगी का रिपोर्ताज तैयार करने के सिलसिले में वहाँ कई बार जाना पडा। ख्याल आया कि यह तो छोटी जेल है जबकि हम एक बडी जेल में बन्द होकर बडा शाप झेल रहे हैं।

किन्तु इसमें कुछ स्थितियां ऐसी हैं जो उलझ जाती हैं या शब्दों का खेल नजर आती हैं।

यह एक अर्थ में निर्देशक के लिए रचनात्मक चुनौती का नाटक है। ब० ब० कारन्त की प्रस्तुति में सब कुछ साफ था। जो चीजें कहीं साफ नहीं थीं, वे भी उन्होंने स्पष्ट कर दीं। निर्देशक बराबर समानान्तर रचनाकार के रूप में आता है। कारन्त जी ने शब्दों ध्वनियों के भीतर से पात्रों की गतियों को और कविता को पकडा है, जिससे सारा नाटक स्वयं अर्थ स्पष्ट करता हुआ आगे बढता है। शब्दों के खेल को मंच का खेल बनाया जाना चाहिए।

बहुत अरसे से आपका कोई नाटक नहीं आया। क्या इन दिनों कुछ लिख रहे हैं?

मैं लगातार लिखता रहा हूँ। नौ वर्ष से बोलो बोधिवृक्ष इलायची बेगम छत्रभंग—ये तीन नाट्यालेख मेरे पास हैं। मुझे लगा है कि इनमें बहुत झोल है। इसलिए मैंने उनको अपने तक रखा। वैसे, बोलो बोधिवृक्ष 1981 में मराठी में अनूदित होकर प्रदर्शित हुआ है। हाल में मैंने उसे फिर लिखा है और अब खेलने के लिए दे रहा हूँ। कई रंगशिविरों में मैंने समय समय पर उसे जांचा है और अब सन्तुष्ट हूँ। आजकल खारी बावली नाटक लिख रहा हूँ। हमें नाटक लिखने में जल्दी नहीं करनी चाहिए। यह सवाल मैं लक्ष्मीनारायण लाल के सामने भी उठाता था कि पटेलनगर में अगर दो दृश्य लिखने रह गये हैं तो उन्हें आप मंडी हाउस तक आते-आते रास्ते में ही अपनी गाडी रोककर और लिखकर कैसे पूरा कर लेते हैं?' हमें थोडा सब्र करना और अपने साथ सख्त होना जरूरी है। •

॥ पात्र ॥

चाचा / नकाबपोश—एक
गोगा / नकाबपोश—दो
काले
लाले
नीनी
छीछी
बोधिवृक्ष



॥ मचसज्जा ॥

जहा तक सभव हो सके,
मच को भव्य और औपचारिक बनाया
जाय, किंतु उसका इस्तेमाल कतई
अनौपचारिक हो। इस नाटक के
पात्र जब तब उद्दड होकर
मच की सामग्री से खेलते है, चीजो को
तोडते, जोडते और झाड़ू से साफ करते
रहते है। अत उनके
हर वक्त कुछ न-कुछ करने के लिए
कुछ न-कुछ
जरूर होना चाहिए। निर्देशक एव
अभिनेता
अपनी अन्तरग 'उपज' का भरपूर, किंतु
निरथक अदाज मे एक
साथक बुनावट दें।



॥ पूर्वार्ध ॥

[मच पर एक आदमीनुमा पेड। पुराने-पीले-फटे-छपे कागजो मे लिपटा हुआ। डालो पर लटक रही हैं--रद्दी किताबें, पत्रिकाएँ, बहियाँ। आस-पास वेद शास्त्र-पुराणो के ढेर, कुछ इस तरह कि 'आसन' बना कर उन पर बठा जा सके। बीच के खोखल मे एक घटिया-सा गत्ते का टेलीविजन, जिसके पर्दे पर अकित है—'रुकावट के लिए खेद सहित राष्ट्रीय कार्यक्रम।'

लकडी के दो चमकीले फ्रेम। उनमे टँगी हुई बहुत सी चीजें सुनहरे मुकुट, नोंकदार जूतियाँ, ढोलक, दुपट्टे, टाइया, आईने, काठ के कघे, फर की टोपियाँ, चूडीदार पायजामे, शराब की बोतलें, लहँगे, फोनयत्र आदि। फर्श पर नगाडा, कुल्हड, घुघरू, झाडू और अनत कबाड।

सब कुछ एक अवास्तविक धुध मे थरथराता हुआ। धीरे धीरे, और भी ज्यादा अवास्तविक लगते हुए कलाकार—अपनी मनपसद वेशभूषा मे लद्दड-से आते हैं और चौपाये बन कर कागद पत्तर चरने लगते हैं। एकाएक टीवी से समाचार प्रसारण से पहले का तेज सगीत फूट पडता है। कलाकार डर कर एक दूसरे को चाटने लगते हैं। पृष्ठभूमि से एक कर्कश पुरुष-स्वर उभरता है—'वदना कीजिए, वदना। मगलाचरण, वदना, प्रेयर--विदाउट फियर एड फेवर! शुरू कीजिए!' कलाकार पक्तिबद्ध-करबद्ध खडे होकर, अतिरजित श्रद्धा प्रदर्शित करते हुए गाते है।]

वदौ पीएम दलपति, डिप्टी पीएम अनाम
हर एमपी एमल को, 'मंग्जीमम' परनाम
भारतेंदु प्रसाद और श्री मोहन राकेश
तीन देव पैदा करें, सकट विघ्न-क्लेश
नाटयगुरु हैं नेमिजी, तार सप्तकी जन
उनके सुमिरन से रहे, 'हैडेक' में भी चन
थेटर का अब लक्ष्य यह, बढे ऊब सिरदद
जाएँ घर माया पकड, दर्शक औरत मद
'बोलो बोधिवक्ष' मे, उलट पुलट विकराल
मूरख नाटककार ने, किया हाल-बदहाल
सीग-पूछ सब लापता, इस ड्रामा का खोट
आगे से देना नही, डाइरेक्टर को वोट

[नेपथ्य से निर्देशक का क्रुद्ध स्वर—'ब
बकवास करते हो ' मैं इस प्ले का डाइरेक
हूँ। मुझे इलेक्शन लडना है। मुझे आप
चाहिए स का वोट जरूर चाहिए। एनी
अब तुम लोग मन्त्रोच्चार करो और वा
आ जाओ !

टीवी पर एक लोकप्रिय 'धारावाहि
का सगीत बजता है। कलाकार भ
नाटयम कत्थक ब्रेक डास और लोकन
की कुछ भगिमाओ के साथ मन्त्रपाठ क
हैं।]

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यास रूपाय विष्णव
नमो वै ब्रह्मनिधय वासिष्ठाय नमो नम
ओ रामभूमि शिलाय नमो नम
ओ बाबरी मस्जिदाय नमो नम

ओ महँगाई वर्प्टाय नमो नम
ओ लॉ एंड आडर नष्टाय नमो नम
या देवी सर्वभूतेषु भ्रांति रूपेण सम्स्थिता
नार्थ ब्लाक साउथ ब्लाक
मंडी हाउस शास्त्री भवन कृषि भवन विज्ञान भवन
लाइसेंस-परमिट फाइल रूपेण सम्स्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम
ओ मास्को वाशिंगटनाय नमो नम
ओ बिग पावर प्रभुताय नमो नम
ओ उग्रवाद महाबलाय नमो नम
ओ इलेक्शनाय संसदाय नमो नम
ओ दाल चीनी चाय लुप्ताय नमो नम
ओ कमीशन का भेद गुप्ताय नमो नम
ओ जिंदाबाद जुलूसाय नमो नम
ओ मुर्दाबाद हाय हाय नमो नम
हाय हाय नमो नम
हाय हाय नमो नम
हाय-हाय नमो नम
हाय हाय नमो नम

[सहसा अंधकार। बिजली की कड़क और कौंध। गोलियों की आवाज। चीख पुकार। जै जैकार। गजल— हंगामा है क्यों बरपा थोडी सी जो पी ली है।' स्वर 'मुझे मारो मत मुझे छोड दो! आह, मेरी बच्ची!' गीत का एक टुकडा— दमादम मस्त कलंदर। ट्रकों और जीपों का शोर। एक अखबार वाला - 'दो सौ दस मरे, सिर्फ दो

सौ दस मरे। पजाब मे पैंतीस और कश्मीर म तईस को मौत के घाट उतार दिया गया। भागलपुर म एक सौ बयालीस लाशें मिली। कुल दो सौ दस मरे। कल तक सख्या डबल होने की उम्मीद – चार सौ बीस, चार सौ बीस।" प्रकाश होने पर, पेड की परिक्रमा लगाते हुए चाचो और गोगो नीनी और छीछी, काके और लाले।]

चाचा यह नही हो सकता।

गागा बिल्कुल न-न-नही होऽ सकता।

नीनी यह तो हद है।

छीछी तुम अपनी हद मे बाहर जा रही हो।

काके फैसला मुझे करना है।

लाले तुम क्या खाके फसला करोगे?

चाचो तुम जरूरत से ज्यादा हकला रहे हो आज।

गागो म्म्मेरे हऽऽक्लाने स तुतुतुम्ह क्या!

नीनी बकवास मत करो।

छीछी तुम अव्वल दर्जे की झूठी हो। मक्कार!

काके जो मैं कहूँगा, वही होगा।

लाल तुम मुझ पर हुक्म चलाने वाले हो कौन?

चाचो तुम्हारी औकात क्या है?

गागा तुमसऽऽ ज्यादाऽऽ है।

नीनी ज्यादा जबान मत चलाओ।

छीछी तुम मुझे धोखा नही दे सकोगी।

काके आज तक किसी न मर सामने मुह नही खोला।

लाले यह हकडी किसी और को दिखलाना।

चाचा तुम तो अपना चुनाव भी हार गय थे। मैंन तुम्ह

जितवाया ।

गोगो यह तुम्हाराऽऽ प्रोपेगंडा है।

नीनी चीफ सेक्रेटरी को मैंने पटाया था।

छीछी लेकिन — योजना मैंने बनायी थी।

काके तुम्हे पता है, मैं अपने बहादुर साथियो का कमांडर जनरल हूँ।

लाले मुझे और भी बहुत-कुछ पता है।

चोचो प्रधानमंत्री तो कोई एक ही होगा। मैं लोकप्रिय हूँ।

गोगो पार्टी केऽऽ नब्बे फीसदीऽऽ एमपी मेरे साथ है।

नीनी मेरी कंपनी को इस कांट्रैक्ट की जरूरत है। आई वांट दिस !

छीछी मैं अपने मालिक से कमीशन तय कर चुकी हूँ। आई विल किल यू।

काके आखिर तुम्हारी मंशा क्या है ?

लाले यही कि तुम मेरे मामला म टाग न अडाओ।

चोचो तुम्हारी गिनती सही नही है। ज्यादा एमपी मेरे साथ हैं।

गोगो तो मैदान मे आऽऽ जाओ, पताऽऽ चल जायेगाऽऽ तुम्हे अपनीऽऽ पापुलरटी का !

नीनी मान लो, चीफ सेक्रेटरी तुम्हे घास न डाले !

छीछी तो उसकी घास को तुम भी नही खा सकोगी।

काके अब मैं तुम्हे बर्दाश्त नही कर पा रहा हूँ।

लाले तो मत करो !

चोचो उम्र मे तुम मुझसे छोटे हो ! मैं अस्सी का हो चुका हूँ। मुझे पीएम बनने दो।

गोगो इसमेऽऽ क्या, काबलियत कीऽऽ बात करो ! मरना है तो जल्दी मरो !

नीनी तुम क्या करोगी ? चीफ सेक्रेटरी लट्टू है मुझ पर !
छीछी मैं तुम्हारी और चीफ सक्रेटरी की प्रेम-कहानी प्रेस को दे दूंगी।
पेड सुनो !
काके सुन रहा हूँ।
लाले क्या सुन रहे हो ?
पेड सुनो सब लोग सुनो !
चाचा सब लोगो को सुनाने की क्या जरूरत है ?
गागो यह तोऽऽऽ तुम्हीऽऽऽ कह रहे हो !
पेड सुनो ! तुम भ्रम मे हो।
नीनी अपने भ्रम का निवारण तुमसे नही कराना है मुझे !
छीछी मुझे किसी के भ्रम-व्रम से क्या लेना ?
पेड सुनो, तुम सुन क्यो नही रहे हो !
काके सब सुन रहा हूँ मैं—बस, यह अकड दिखलाना बन्द करो !
लाले मैंने क्या अकड दिखलायी है—जो—
पेड सुनो, मैं बोधिवृक्ष हूँ !
चोचो अब यह तुम्हारा नया शगूफा है कि तुम बोधिवृक्ष हो !
गोगा बेवकूफ, मुऽऽऽझे तोऽऽऽ बोधिवृक्ष काऽऽऽ मतलब भी नही मालूम !
पेड चोप्प ! तुम सब बहरे हो क्या ? कान पथरा गये हैं तुम्हारे ? दूर हटो मुझसे !

[पेड जोर से हिलता है। धरती थरथराती है। परिक्रमा करते हुए चोचो, गागा नीनी, छीछी, काके और लाले डगमगाते हुए दूर जा गिर पडते हैं।

अन्धकार।

एक प्रकाशवृत्त चाचा और गोगा पर

खुलता है। दोना कुछ पल एक दूसरे को वटखनी निगाहा स घूरते है, फिर ठहाका लगा कर हँस पडत है ।]

चाचो (हँसते हुए) ओऽहो हद हो गयी !

गोगो (पेट पकड कर हसीं रोकते हुए) घघघघऽऽत्त तेऽरे की। तुऽऽमन ता मुझे हँमाऽऽऽ हँसा कर मार डाना !

चाचो देख हक्लू !

गोगा बोल, टक्लू !

चोचा हम दोनो विदूषक है। रगमच रूपी 'ढनफ बाड के सिक्योरिटी गाड !

गोगो एकदम सही टूऽऽऽ हड्रेड परसेंट सही।

चोचो मेरा नाम चोचो, तुम्हारा नाम गागा !

गोगो चाचो और गोऽऽऽगा !

चाचा हम अपनी मर्जी से विदूषक नही बने।

गोगो नहीऽऽऽ बन !

चाचो इतिहास गवाह है कि विदूषक पदाइशी नही होते हैं, जनता उन्ह बनाती है।

गोगो ऽऽऽ बनाती है !

चाचो कहना चाहिए कि जनता उन्ह चुनती है ।

गागो चुऽऽऽनती है !

चोचो हम जनता न चुना है।

गोगा ऽऽऽ चुना है।

चोचो क्यो चुना है ?

गोगा चुनती नहीऽऽऽ तो करती क्या ?

चोचो यानी जनता क पास कोई विकल्प नही था।

गागो ऽऽऽ नही था।

चाचो वह मजबूर थी कि हमे चुन !

गागा SSS चुन !

चाचा दानो तरफ हमी-हम थे !

गागा बिल्कुलSSथे ! SSथ ! SSथे !

चाचो वो चाहे वोट इधर डाले या उधर —

गोगो SS चुना जानाSSS तो हम ही था !

चाचा जनता ने हम चुन लिया।

गागा आ-हो ! आ-हो ! गोगा बाबूSSS (साँस फँस जाती है) जि दाबाद !

चाचा (नाराज होकर) यह गलत है। तुम अपने लिए खुद ही नारे लगा रहे हो !

गागो जि दाSSSबाद के नाSSर मैं स्वयं लगाता हूँ, हमेशा। चाचा, मुSSझे डर लगा रहता है कि कही वेSS मुर्दाबाद न कह दें !

चाचो गागा समय बहुत कम है और हम देश के भाग्य का निर्णय करना है। इस समय हर नागरिक, हर मतदाता टीवी के सामने बैठा हुआ है। वह जानना चाहता है कि सरकार किस पार्टी की बनेगी और प्रधानमंत्री कौन होगा ?

गागो उसे मालूम है—गोऽगा बाSSब् ! यू प्राइमSSमिनिस्टर !

चोचा गागा, यह मत भूलो कि हम विदूषक हैं। हमारा पहला कर्त्तव्य क्या है ?

गोगो ऍंटरSSस्टेनमेंट !

चाचो जनसाधारण का मनोरंजन करना। हमारा दूसरा जिम्मा है – सरकार बनाना। सत्ता सभालना। राजपाट करना !

गोगा टु निएटSSSSटरSSस्टेनमेंट एंड टु फामSS एSSS गवर्नमेंट !

चाचो देखा गागा मोशाय, प्राइम मिनिस्टर तो मुझे ही बनना है।

गोगो नाSS आई विलSS लीड दिSSS नेशन !

चाचो तुम हक्लाते हो।

गागा तुमऽऽऽ मेरीऽऽऽ इन्सल्ट कर रहे हो!

चाचा देशवासी इस बात के लिए अपने को अपमानित महसूस करेंगे कि उनका प्रधानमंत्री हक्लाता है! हक हक हक हक् हक्!

गागो (चिन्तित और भयभीत) ऐसाऽऽऽ नहीं होगा।

चाचो ऐसा ही होगा। हक्लू किसी को पसंद नहीं।

गागो अच्छा! (अचानक खुश होकर) तुम भीऽऽऽ पीएमऽऽऽ नहीं बन सकते!

चाचा (सकपका कर) क्या नहीं बन सकता?

गागो एकऽऽ बडा गंदा सार्वजनिकऽऽ दोष है तुम्हारेऽऽ भीतर!

चाचा क्या दोष है?

गागा ऽऽऽ तुमऽऽऽ आवाज करते हो! (एक हाथ नाक पर, दूसरा पुट्ठों पर रख कर) यहाँ से। ऽऽऽ पब्लिकली आवाजऽऽऽ करते हो!

चाचा पालिटिक्स में यह कोई दोष नहीं है। सभी पालिटिशियन्स ऐसा करते हैं। यह तो एक जनरल आई मीन टू से कामन फिजिक्ल रिएक्शन है। इससे एक कामन अंडरस्टैंडिंग का एट मॉस्फीयर बनता है!

गागा नोऽऽ यह कोऽऽई एक्सक्यूज नहीं है।

चाचो तुम मुझे अंडर एस्टीमेट कर रहे हो।

गोगा मिस्टर चाचो, जबऽऽऽ तुम्हें अंडर एस्टीमेट किया गयाऽऽऽ तभी तो यह दोष मालूम पडा।

चोचा इटस टू मच! आई विल नोट टालरेट दिस नानसेन्स!

गागा डांट बीऽऽऽ अपसेट! जरा विजुअलाइज तो करो। तुम एजऽऽऽ प्राइम मिनिस्टर यूएसए कऽऽ प्रेसिडेंट से अथवाऽऽऽ इंगलैंड की महारानी से हाथ मिला रहे हो औरऽऽऽ

आवाज कर रहे हो। तुमSS टीवी पर आ रहे हो औरSSS आवाज कर रहे हो। तुम तोS नालकिला को भी—

चाचो शट अप! (आवाज करता है।)

गागा यही तोSS मैं कह रहा था। पूराSS मुल्क सुनेगा यहSS आवाज औरSS शर्मिन्दा होगा।

चाचा तो! (होंठ कस जाते हैं।)

गागो तोS तोSS क्या?

चाचा हम दोनों में से एक को प्रधानमंत्री बनना है।

गागा जरूरSS बनना है!

चोचो एक हमामा है।

गोगो SS दूसराS S आवाज करता है। (रुक कर) लेकिन—SSहम लाहट का लोगSS बुरा नहीं मानते!

चोंचा मानते हैं। (दाँत पीसकर) कुछ भी हो, मैं तुम्हें पीएम नहीं बनने दूंगा।

गोगा मैं हीSS बनूंगा! मेरी जाति केSSS बावन, उपजाति केSS अट्ठावन एमपी हैं।

चोचो (चीख कर) नहीं! मुझे मरने से पहले एक बार प्रधानमंत्री बनना है!

गागा हा-आ! आई विल बिकमSSS दिSS प्राइमSSS मिनिस्टर!

[चोचो एकदम गागो पर झपट पड़ना चाहता है कि पेड़ चीखता है—'सुनो!' फिर वह नाचते नाचते गाने लगता है।]

पेड़ सुनो, सुनो मैं हूँ बोधिवक्ष!
मुझे समझो जानो!
मैंने ही खींची थी सिद्धार्थ के अंतमन में
ज्ञान की उज्ज्वल लकीर
और उन्हें खिलायी सुजाता की खीर!

उस खीर को समझो, लकीर को जानो
मुझे पहचानो !

चाचा तुम कौन हो?

पेड़ मिस्टर चाचा, मैं चोचा का मुरब्बा हूँ और गागो का गुड़ हूँ ! मुझे खाना मुश्किल, लेकिन पाना आसान। मेरे भीतर ज्ञान ही ज्ञान। मेरा एक ही फामूला, एक ही बखान—कि—(फिर नाचता गाता है)
बांट के खाओ
छांट के खाओ
फांट के खाओ
लेकिन कभी किसी को ना डांट के खाओ
खाओ खाओ खूब खाओ कमीशन खाओ एडमीशन खाओ !
इधर से लाओ उधर से लाओ—इम्पोट !
यहां स पाओ वहां से पाओ—एक्सपोट !
खाओ तो लडो मती
दुविधा मे पडो मती
वरना पछताओगे मार्कोसलाल मुटल्ले के भाई !
चाऊशेस्कू और एलेना की तरह
सरेआम मिट जाओगे
सुजाता की खीर से वंचित रह जाओगे !

चाचा यह क्या बक रहा है?

गागो यह तर मुरब्बे मे मेरा गुड मिला रहा है।

पेड़ अगर तुम्हे चाहिए गद्दी—
तो देखना होगा कि आईने मे तुम्हारी शक्ल
हो सबसे अच्छी
और सबसे भद्दी

लेकिन—सब्र करो
उधर दो और दो—चार और है
उन पर भी ध्यान धरो !

[दो अलग अलग प्रकाशवत्त आकार लेते है। उनमे काले और लाले, नीनी और छाछी, आपस मे गुस्सा प्रकट करते हुए।]

न जाने चारो ने
मन म क्या ठानी है
मैं बोधिवक्ष हूँ
इसलिए मुझे हैरानी है
असल म तुम छहो की
एक ही परेशानी है !
एक ही कहानी है, उस कहानी म—
एक निरथक खीचातानी है !

[काके और लाले प्रकाशवत्त म। शेप सब अधकार मे।]

काके मैं चाहता हूँ कि उसे चौराहे पर खडा कर गोली स उडा दिया जाये !

लाले मैं चाहता हूँ कि उसे पेड से बाँध कर जिदा जला दिया जाये। उस यातना दी जाये।

काके लाले मैं तुम्हारे आइडिया स सहमत नही हूँ। जब हम भीड मे उस गोली मारेंगे तो लोगो मे आतक फलेगा। हम आतकवादी हैं। हमारा मक्सद आतक फैलाना ह।

लाले काके, मैं आतकवादी नही हू।

काके तो फिर क्या हो तुम बजरिया की औलाद !

लाले मेरी माताश्री को गाली मत दो। वह कभी भी बजरग दल की सदस्या नही रही !

काके खैर, हे भ्रष्ट जीव ! तुम अपनी असलियत स्पष्ट करो।
लाले मैं आतंकवादी नहीं, उग्रवादी हूँ।
काके क्या तुमने पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' का नाम सुना है ?
लाले मुझे किसी पाडे और भाडे बेचने वाले से मत जोड़ो।
काके मैं पूछता हूँ, तुमने पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' का साहित्य पढ़ा है ?
लाले मैं किताब नहीं पढ़ता, टीवी देखता हूँ और वीडियो पर—
काके अगर तुमने पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' को नहीं पढ़ा, तो तुम उग्रवादी नहीं हो सकते !
लाले तुम्हारा भेजा सड़ गया है।
काके तुम्हें सफाई देनी होगी।
लाले ठीक है, मैं सफाई देने के लिए तैयार हूँ। तुम मुझे महा उग्रवादी मान सकते हो।
काके क्या मतलब ?
लाले मतलब यही कि जिसने उग्र को नहीं पढ़ा, नहीं जाना, वह महाउग्रवादी हो सकता है !
काके महा का अर्थ है, महान !
लाले तो मैं महान उग्रवादी हूँ। उसी तरह कि—जिन्होंने गांधी को नहीं पढ़ा, वे आज महान् गांधीवादी हैं और जिन्होंने कार्ल मार्क्स की पुस्तकों को सिर्फ आलमारियों में सजा कर रखा, वे महान् मार्क्सवादी हैं और जिन्होंने नक्सलवाड़ी का एक रोमांचक ब्लू फिल्म की तरह सेवन किया, वे नक्सलवादी हैं !
काके चोप्प ! हरामी, तुम तो सभी की धज्जियाँ उड़ा रहे हो !
लाले मैं पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' का समर्थन की कोशिश कर रहा हूँ !

काके ऐसे उग्रवाद को ही घासलेटी कहा गया है। यू सी, आतकवाद म टैरेरिज्म मे, एक खास तरह का चाम है!

लाले अपना यावडा दूर रखो। लगता है मन् सतालीस के बाद तुमने अपने दात ही साफ नहीं किय।

काके मैं तो मन तिरेसठ म पैदा हुआ था।

लाले ठीक है पैदा होन स पहले अपने दात तो साफ कर लेते!

काके कल सुबह अमेरिका के एक सीनेटर ने मुझसे कहा—आतकवाद अच्छी चीज है। अभी थोडी देर पहले, रूस के एक बडे कम्युनिस्ट नेता ने मुझे फोन किया—आतकवाद बहुत बुरी चीज है।

लाले फोन किया तुम्हे?

काके हाँ।

लाले स्साले टैररिस्ट! जगल जगल भटकते हुए और झाडियो पत्थरो म अपने चूतड रगडते हुए तुमने उनका फोन रिसीव किया!!

काके लकिन, भाई लो, अगली बार अमेरिका वाला सीनेटर कहेगा कि आतकवाद बुरी चीज है और रूसी लीडर बोलेगा कि टैररिज्म मे जितनी अच्छाइया है उतनी तो कम्युनिज्म सोशलिज्म मे भी नही है। अर्थात आतकवाद को सुविधानुसार, अच्छा और बुरा कहा जा सकता है।

लाले आतकवादी सुविधाओ की सूची बना कर मुझे पटटी मत पढाओ।

काके समझो जरूर समझो। अब धतूर अगर तुम एक केन्द्रीय मत्री की पत्नीनुमा रखैल का अपहरण कर लोगे तो आतकवाद थू थू-थू बुरा हो जायेगा। किन्तु और परन्तु,

ह जन्तु ! यदि तुम थ्रू वूथ कैप्चरिंग, वद्रूके की नोक आगे रख कर, मतपेटियों को कब्जे में ले लो और संसद में पहुँच जाओ तो आतंकवाद व्यापक जन-समर्थन का प्रतिनिध बन जाता है उसे संवैधानिक मान्यता मिल जाती है। समझ गये, चिरकुट !

लाल यह चिरकुट क्या हुआ ?

काके जब भगवान रामचन्द्र चित्रकूट में थे तो उन्होंने एक कूटनीति की—अपनी पादुका भरत को दे दी ! प्यारे भाई, इन सिंहासन पर रखो और चिरकुटों पर भरोसा कर राज करो !

लाल यानी, चिरकुट हुआ एक रेडीमेड एडवाइजर, सलाहकार !

काके यस्स यू आर राइट !

लाले तो हे चिरकुट, अब अपनी मंदबुद्धि का उपयोग इस चिन्तन में करो कि गुलजारसिंह कनातवाला का क्या किया जाय ?

काके यह तो तय है कि गुलजारसिंह कनातवाला के कारण तुमने यह बीहड़ रास्ता अपनाया—

लाले यह पूरा सच नहीं है। मुझे शुरू से ही हथियार अच्छे लगते थे किन्तु मैं डरता था। शरीर से काफी कमजोर था। नहाते वक्त अपनी हड्डियाँ देख कर कंपन होती थी। दोस्त मेरा मजाक बनाते थे। सावित्री तो मुझे देखते ही हँसने लगती थी। एक दफा उसने कहा—लाले, तू तो चरखे की तकली है !

काके सावित्री से मुझे भी चिढ रही। वह अपनी ही ऐंठ में रहती थी।

लाले जब मैंने पहले पहल रिवाल्वर हाथ में थामा और गोली

दागी तो सचमुच अपने को ताकतवर महसूस किया ।

काके तुम चाहते थे कि गुलजारसिंह कनातवाला अपनी लड़की सावित्री की शादी तुमसे कर दे ।

लाले नहीं, मैं यह नहीं चाहता था । मेरी इच्छा थी कि वह मेरे साथ रहे और मेरी ताकत देखे ।

काके ताकत दिखलाने के लिए ही तुमने, सावित्री के सामने—सब्जी बाजार में, दो आदमियों को भून डाला था ?

लाले हां यह सही है । लेकिन, उस वक्त सावित्री ने एकदम चीख कर कहा—कुत्ते कमीने, कायर ! वह मुझे पकड़ने के लिए दौड़ी और मैंने अपना रिवाल्वर उस पर खाली कर दिया ।

काके लाले तुम्हें सावित्री ने कायर कहा ?

लाले हां । मैं कायर हूँ । कुत्ता और कमीना भी हूँ । चूंकि मैं अपने से नफरत करता हूँ इसलिए सारी दुनिया से नफरत करता हूँ । मेरा कोई आदर्श नहीं है । मैं एक मुर्दाघर की तरह जवता हूँ ।

काके तुम इस गुलजारसिंह कनातवाला का क्या उठा लाये हो ?

लाले मैंने उससे बीस लाख मांगे थे । उसने नहीं दिये ।

काके बीस लाख ही क्या ?

लाले मैं चुनाव लड़ना चाहता था ।

काके बीस लाख रुपये न दे कर कनातवाला ने लोकतन्त्र के प्रति तुम्हारी रुचि की हत्या कर दी !

लाले (उबासी लेकर) मैंने सोचा था कि कुछ देश की भी सेवा कर ली जाय ! चलो, अब कनातवाला की सेवा कर देते हैं ।

काके मैं उसे गोली से उड़ाना चाहता हूँ ।

लाले मैं तो उसे पेड के साथ बांध कर जिन्दा जलाऊँगा !

काके तुम्हें ऐसा करने का कोई हक नहीं।

लाले मुझे ज्यादा हैन-तन बर्दाश्त नहीं। कनातवाला को मैं लाया हूँ।

काके तुम मेरा रिकार्ड खराब कर रहे हो ! यदि मैं कनातवाला को अपनी गाली से उड़ा दूगा तो मेरी डबल सेंचुरी हो जायेगी !

लाले (क्रूरतापूर्वक) मैं तुम्हारी डबल सेंचुरी नहीं बनने दूंगा।

काके तुम नीच हो। और सचमुच कायर हो ! तुम इसलिए मुझसे ईर्ष्या रखते हो क्योंकि तुम्हारी अभी तक हाफ सेंचुरी भी नहीं बनी !

लाले मैं नीच हूँ और कायर हूँ। तुम भी नीच हो और कायर हो। (सहसा बिफर कर) हम न हँस सकते हैं, न रो सकते हैं।

काके न जाग सकते है, न सो सकते है।

काके हम सिर्फ कायर और कायर और कायर ही हो सकते हैं।

काके बुलाओ, इस नाटक के निर्देशक को उसने हमें 'एक्सपोज़' करने के लिए इस स्टेज पर क्यों खड़ा किया है ?

[दोनों विक्षिप्त से अपने को और एक दूसरे को देखते हैं।]

गायन हम होंगे बनकाब
हम होंगे खुद खराब
एक दिन
एक दिन
हम अपने काले चेहरे ले जाएँगे वहाँ—
और मुर्दा जिन्दगी दफनाएँगे वहाँ

हम किसको देंगे, किसको देंगे, कैसे देंगे
भीतर जलते नरक का हिसाब
एक दिन
एक दिन
[प्रकाशवृत्त धुँधलाने लगता है।]

पड बोधिवक्ष को दर्शक क्षमा करें।
कर सकें तो कर दें, न करें तो न करें
काके और लाले का आतंकवाद से
कोई वास्ता नहीं
इस नाटक में वे जिधर से घुसे
और जिधर गये
वह उनका रास्ता नहीं
पता नहीं किसकी भूमिका किसके संवाद
वे कहाँ से उठा लाये और बोल गये
नाटक के दरवाजों में ताले लगाकर—
खिड़कियाँ खोल गये
अब अगर कोई दृश्य भटके तो उसको भटकाव न मानें
अटके तो अटकाव न जानें।

[अंधकार। प्रकाशवृत्त नीनी और छीछी के उनींदे मुखड़ों पर धीरे धीरे फैलता है।]

नीनी हम कहाँ हैं?

छीछी वहीं तो होंगे ही। तुमने यह नेलपालिश कब लगायी थी?

नीनी मैं इतना सेंट लगाती हूँ, फिर भी पसीने की बू—

छीछी मैं एक लड़की को जानती हूँ उसकी वार्डरोब साड़ियों से और गैराज गाड़ियों से भरी रहती है।

नीनी जरूर वह कोई कालगर्ल होगी।

छीछी मेरा ओहदा तो अपनी कंपनी में चीफ पब्लिक रिलेशन आफिसर का है।

नीनी ठीक है। इज्जत है, तो सब कुछ है। देखो न, बॉस ने मुझे मार्केटिंग सर्वे का पूरा डिपार्टमेंट सौंप रखा है।

छीछी तुम्हारा बास बंगाली है क्या ?

नीनी क्यों ? तुम्हें किसने बतलाया ?

छीछी बतलाया किसी ने नहीं। तुम्हारी सलवार कमीज में मच्छी-भात की गंध आ रही है, इसलिए—

नीनी लेकिन तुम अपने मदरासी एमडी को एक रूमाल खरीद कर जरूर दे दो। वो अपना मुंह और इडली-साँभर तुम्हारी साड़ी के पल्लू से ही पोंछता रहता है।

छीछी अरे, उधर तो देखो ! तुम्हारा कछुआ और मेरा खरगोश !

[काके और लाले का प्रवेश।]

छीछी हाय लाले, हाय काके !

लाले हाय छीछी, हाय नीनी !

नीनी हाय !

काके (नीनी से) हाय !

नीनी मैं तुमसे नाराज हूँ।

काके मैं नहीं हूँ। और, मुझे आता है—तुम्हें मनाना !

छीछी (लाले से) तुमने किससे सीखा—साठ मिनट चवालीस सेकिंड लेट आना !

लाले सॉरी, मैं फँस गया था।

नीनी (काके से) तुम मुझे भूल जाते हो।

काके नहीं डार्लिंग, आज तो मैं अपने आपको भी भूल गया था।

[छीछी और लाले, नीनी और काके—अब तनिक हट कर परस्पर बतिया रहे हैं।]

छीछी किसी लड़की से इतना इंतजार कराना ठीक नहीं।

लाले तुम लड़की नहीं हो। यदि तुम्हारी सारी जीवन का ठीक से निवाह किया होता तो कम से कम दो टेररिस्ट अब तक इस देश को मिल जाते!

छीछी (डर कर) टेररिस्ट! क्या मैं टेररिस्टों को जन्म देती? (क्रुद्ध होकर) तुमने समझ क्या रखा है मुझे? यू ऽऽ बास्टर्ड!

लाले (हँस कर) बास्टर्ड तो मैं हूँ लेकिन तुम्हें बास्टर्ड की तरह खाने और काटने की मुझे आदत पड़ गयी है। छीछी, यू आर डम टेस्टी!

छीछी दूर हटो। आई हैट यू!

लाले परमहंस महेश योगी कहते हैं कि जहाँ घृणा है, वहीं सच्चा प्रेम है।

छीछी डाँट टच मी। (पल्लू से आँखें पोंछती हुई) क्या मैंने इसलिए इतनी देर तक तुम्हारा वेट किया कि तुम मुझे टेररिस्टों की मम्मी बनाओ!

लाले तुम्हारी खोपड़ी में सेंस ऑव ह्यूमर नहीं है। तुम जिंदगी में कुछ नहीं कर सकोगी, छीछी!

छीछी मुझे कुछ नहीं करना।

लाले बट आई वांट टु डू समथिंग थ्रू यू! खैर, हुआ यह कि मैं आज एक नाटक की भूलभुलैया में फँस गया और टेररिस्ट बन गया!

छीछी बहानेबाजी बंद करो। आई नो, यू आर ए पक्का लायर, असत्यवादी!

लाले अमृतसर तरनतारन बारामूला अनंतनाग की कसम मैं सच कह रहा हूँ। मुझे एक नाटक में झूठमूठ का टेररिस्ट बना दिया गया था। बड़ी मुश्किल से जान छुड़ा कर आ रहा हूँ छीछी!

छीछी रियॅली ? आर यू स्पीकिंग ट्रू थ ?

लाल मुझे याद नहीं, मैंने कौन से डायलाग बोले और क्यों बोले और कैसे बोले लेकिन मैंने बोले जम कर बोले, मैं बहुत खूंखार हो गया मेरे अंदर का पशु—वह गैंडा—मुझ पर हावी हो गया।

छीछी गैंडा बनना तुम्हारे बस की बात नहीं, लाले ! हां जो रँगा हुआ सियार तुम्हारी आत्मा मे है वह कभी-कभी प्रकट हो जाता है।

लाले गैंडा—सियार क्या फर्क है दोनो मे—क्या फर्क है ?

छीछी तुम्हारे आध्यात्मिक गुरु महेश योगी कहते हैं कि कोई फर्क नहीं है। (दोनों अचानक तनाव रहित होकर हँस पडते हैं। एक अट्टहास नेपथ्य से भी उभरता है और गूंज पैदा करता है। विराम।)

काके जब डाइरेक्टर ने कहा तो एकदम इच्छा हुई कि अभिनेता बनने मे कोई बुराई नहीं।

नीनी एक्टर होने की सोच ली तुमने ? तुम्हारा स्टैंडर्ड इतना गिर गया ?

काके गिर गया। इस गिरे हुए समाज म गिरना ही सबसे ज्यादा आसान है।

नीनी अगर मैं भी एक गिरी हुई लडकी बन जाऊँ, तो क्या तुम बर्दाश्त कर सकोगे ?

काके हे गणिके ! गणतत्र के जिस गर्त म गिर कर तुम प्रतिष्ठित हो चुकी हो उससे नीचे गिरने के लिए अब कोई गुंजाइश नहीं है।

नीनी क्या स्कूल मे तुमने सस्कृत-सब्जेक्ट लिया था ?

काके मेरा न कभी कोई सब्जेक्ट रहा, न आब्जेक्ट—मैं एक आकारहीन, उद्देश्यहीन जीव फिर भी खुद को प्रोजेक्ट

करता रहा! (रुककर) अगर मैं कभी विधायक अथवा संसद-सदस्य बन गया, तो संस्कृत में शपथ लूँगा, संस्कृत का मानद् नेता कहाऊँगा, संस्कृत की नींव गाड़ कर संस्कृत की मर्सिडीज में बैठ कर विचरण करूँगा और संस्कृत में साँस लूँगा। संस्कृत में सुरा-सुन्दरी-संगीत का रसपान करते हुए मैं संस्कृति की रक्षा के लिए अपने प्राण... अपने प्राण... अपने प्राण—अपने प्राण रखूँगा!

नीनी ओहो, बोर कर दिया तुमने तो!

काके मैंने आज रंगशाला में भी मामा को बहुत बोर किया—आतंकवादी बनकर!

नीनी मेरे लिए यह एक दर्दनाक अफसोसनाक शर्मनाक हादसा है कि तुम आतंकवादी बने!

काके देखो नीनी, मैं और लाले—सेल्समैन हैं। (स्वगत) इस दो कौड़ी की छिनाल ने आर्थर मिलर का 'डेथ आव ए सेल्समैन' कहाँ पढ़ा होगा! (प्रकट) मैं घूम घूमकर पार्लियामेंट स्ट्रीट से लेकर नार्थ एवेन्यू—साउथ एवेन्यू—चाणक्यपुरी तक 'जवानी का तेल' बेचता हूँ। दो मिनट मालिश करो और फिर जमकर पालिश करो! वयोवृद्ध नेता, अधेड़ अफसर और लाइफ पार्टनर की डिप्लोमेसी के मारे हुए राजदूत, मेरा तेल लपक कर खरीदते हैं। उनकी प्रेमिकाएँ—बीवियाँ मुझे चाव से और ललचाये भाव से देखती हैं। परिणामस्वरूप कभी कभी 'जवानी का तेल' बेचते-बेचते मुझे अपनी जवानी भी बेचनी पड़ती है।

नीनी बस करो प्लीज! मुझसे यह सब नहीं सुना जाता।

काके बेचारे लाले की किस्मत खराब है। वह चाँदनी चौक—चावड़ी बाजार में मच्छरमार अगरबत्ती बेचता फिरता है। मैं समझाता हूँ, असली मच्छर तो अशोक रोड, लोदी रोड,

औरंगजेब रोड पर हैं—यहाँ आओ ! लेकिन लाले की अक्ल तो कूचा पानीराम से बाहर निकलती ही नहीं।

नीनी (स्वगत) सेल्समैन की जुबान बेलगाम होती है ! नमूना हाजिर है !

काके हम दोनों जहां जाते हैं लोग हमें तुच्छ दृष्टि से देखते हैं। क्यों ? क्योंकि हम मामूली सेल्समैन हैं ! कभी कभी डाट-दुत्कार भी खाते हैं। हमारा धंधा ही ऐसा है।

नीनी तुम अपनी हीनता और गिरावट को एक ग्लैमर में लपेटना चाहते हो !

काके नीनी, गिरावट में हमेशा ग्लैमर होता है—इसीलिए तो तुम ग्लैमरस हो और मैं भी ! लेकिन—आज नाटक में आतंकवादी बन कर थोड़ी देर के लिए लगा कि मैं रौब भी झाड़ सकता हूँ। तड़ी मार सकता हूँ।

नीनी माइ लव, यू आर नाट ए टेरेरिस्ट ! मैं तुम्हारी मर्लिन मनरो हूँ।

काके (स्वगत) तो मैं तुम्हारी ब्यूटी को एक्सप्लायट करूँगा।

छीछी तुम मुझसे प्यार नहीं करते, लाले !

लाले प्यार एक व्यापार है, छीछी ! हम व्यापार करते हैं।

छीछी आह, प्यार न करते हुए सब कुछ करने में कितना आनंद है !

लाले महेश योगी कहते हैं—ब्रह्मानंद !

छीछी हम एनीमल फार्म में रहने के आदी हो गये हैं।

लाले यू आर माइ पूसी कैट !

छीछी यू आर माइ अलशेशियन डाग !

नीनी मैं तुम्हारी मोनालिसा हूँ काके !

काके आइ विल सेल योर स्माइल इन दि ओपन मार्केट।

एंटीक्स का बिजनेस करने वाले अच्छे दाम दे कर खरीद

रेंगे।

छीछी आइ थाट इज्जायमट दु गेट औट बनाइमेयम मैं न हमिनी हूँ न पद्मिनी, मैं ना पिशानिनी हूँ वमी ही भूखी और एग्रेसिव जिसकी नाक लक्ष्मण ने काट ली थी। यार, तुम भी मेरी नाक काट ला!

थार इस नगर क श्रेष्ठिजनों के साथ यह तो तुमने अपनी नाक कटा रखी है। ए फेस विदाउट नोज!

लाले प्रेम एक स्वीमिंग पूल हैं, जितनी देर तरना चाहते हो, तरो, फिर कपड़े बदलो और चल दो।

छीछी प्रेम एक ड्राइविंग-लाइसेंस है

लाले अगर वह तुम्हारे पास है तो तुम किसी भी गाडी का इस्ते माल कर सकते हो!

नीनी प्रेम एक करेक्टर सर्टिफिकेट है

काके यदि वह तुम्हारे पास है तो चरित्र की चिंता करने की जरूरत नहीं!

लाले प्रेम तो एक पालिटिकल गम है—

छीछी नशनल गम—

नीनी यदि तुम उस खेलना जानते हो—

काके तो—और लोग जिसे छुपा कर करते है, तुम खुले आम कर सकते हो!

छीछी सावजनिक रूप से!

लाले स्टेज पर! (चारों ठहाके लगा कर हँसते हैं। हँसते रहते हैं।)

काके तो नीनी, यह सुनिश्चित है —

लाले यह हमारे जीवन का निष्कर्ष है छीछी —

काके कि जब कभी हम बिछुड़ेंगे

लाले यानी संयोगवश भोग से अलग होंगे—

काके तो तुम रोओगी नहीं।

लाले मेरी याद में अपने बाँस का तकिया भिगोओगी नहीं!

छीछी प्रामिस! प्रॉमिस!

नीनी आय'म नाट ए फूल!

[चारों फिर पागलों की तरह हँसते हैं और हँसते-हँसते इस तरह मंच पर होहल्ला मचाते हैं, मानो किसी खेल में शामिल हों।]

छीछी लेट'स प्ले दैट फूल्स गेम! क्रिकेट!

नीनी ओके, ओके, हम बालिंग करेंगे।

छीछी मैं लाले को आउट कर दूगी। क्लीन बोल्ड!

लाले नोबॅडी इज क्लीन नोबॅडी इज बोल्ड!

काके लो सँभालो मेरा चौका—बाउंडी के पार—

छीछी व्हेयर इज योर बाउंड्री टेल मी आय'म सिक आइ लव यू!

लाले अगर तुम बाउंड्री पार करना चाहते हो तो इस छीछी को सँभालो!

काके आल राइट, आज से यह मेरी हुई, यह छीछी मेरी मुर्गी! (छीछी को अपनी बाहों में भर लेता है।)

छीछी आम'म डाइंग फॉर यू—ओह—हाऊ नाइस—आइ लव यू—लाले के साथ तो मैं बहुत अनकम्फर्टेबल महसूस करने लगी थी!

काके नीनी गुगली फेंकने में माहिर है लाले! उसकी गेंद ध्यान से खेलो!

लाले मैं तुम्हारे अनुभवों से लाभ उठाऊँगा। (नीनी गेंद फेंकने का अभिनय करती है।)

काके दौड़ कर रन बनाओ लाले! (लाले दौड़ता है और नीनी से लिपट जाता है।)

नीनी ओह दिस थ्रिलिंग चैंज ! ए यू एक्सपीरियन्स ! आइ लव यू, लाले ! फार मी नाक वाज जस्ट अनटॉलरेबल !

लाले समूचे देश म परिवर्तन की लहर चल रही है।

काके यह जरूरी है कि सब कुछ आम सहमति से हो !

छीछी अदला बदली !

नीनी यह खेल तो एक दूसरे का समर्थन प्राप्त करने के लिए है !

लाले व्यर्थ है एक पार्टी का शासन !

काके अनर्थ है अनुशासन !

छीछी उधर से इधर। इधर से उधर।

लाले वाम को दक्षिणपंथियों का ब्लाउज पहनाइये !

काके दक्षिण की टांगो मे वाम मोर्चे का लहँगा फँसाइये !

लाले इसी मे राष्ट्र का कल्याण—

काके और महानिर्वाण !

नीनी जो थोडे प्रोग्रेसिव है वे थोडे रिएक्शनरी हो जाएँ—

छीछी जो रिएक्शनरी है, वे थाडे प्रोग्रेसिव हो जाए —

नीनी अपना अपना स्थान बदलना होगा।

लाले देश ने बदलाव के पक्ष म फैसला दे दिया है।

काके जो इस फैसले को अनसुना करेंगे —

छीछी वे बहरे हैं—यानी कम्युनल !

नीनी फासिस्ट !

लाले विभाजनकारी तत्त्व !

काके देश की एकता और अखडता का तोडने वाले !

छीछी अगर चाहते हैं स्थिर सरकार—

नीनी तो इधर से उधर होते रहिये बार बार !

लाले इसी तरह हम संयुक्त होंगे—

काके और शासन के लिए उपयुक्त होंगे !

लाले अबे खूसट बाधिवक्ष !
काके अरे चोचा और गोगा !
छीछी आओ, अपनी जगह छोड़ कर आओ !
नीनी और बैलेट बाक्स पर ताल देकर हमारे साथ गाओ !
गायन मिले ना सुर मेरा तुम्हारा
तो सरकस चले हमारा !
सुर की नदिया —शेर और बकरी
पानी पिएँ संग-संग
बेसुर बन कर राज करें हम —
गद्दी पर हुडदंग
ओऽऽ बदलें अपना ढंग
जिसको जोडें, उसको तोडें—
सब टूटें और बिखरें !
ओ जय जगदीश हरे !
मिले ना सुर मेरा तुम्हारा
तो सरकस चले हमारा !
आमि बांगाली, म्हारो देस मारवाड
म्हान भोत चोखो लागै रे भाई, मारवाड
शू छे शू छे गुजराती, चुप बे चपरकनाती
असि रखांगे डिमाड अर झगडा करांगे
ढोलणा मैंनु नइ बोलणा !
बरी, साउथ की चरचा छोड
उसने तो कर दिया पाटिया साफ
कबिरा साधो क्या करें
मुल्क रह गया हाँफ
उल्टी बहे अब धारा, बजे इकतारा
मिले ना सुर मेरा तुम्हारा, साउथ न माउथ उतारा
लेकिन—बट, सरकस चले हमारा !

चाचा हमें अपना सरकस चलाना है—

गोगो अपनाऽऽ तमाशाऽऽऽ सबको दिखलाना है!

चाचा यह नहीं हो सकता कि चुनाव हम जीतें, सरकस कोई और चलाये—

गोगो साठगाँठऽऽऽ हमारीऽऽऽ फल कोई औरऽऽ खाय और ऽऽऽ सरकारऽऽ बनाये!

चाचा मतदाताओं ने हमें सिक्कों से तौला था, अब हम तराजू को तौलेंगे—

गोगो ऽऽहकलाकरऽऽऽ बोलते हैं तो क्या, बोलेंगे!

चाचा आवाज करते हैं तो क्या, वह आवाज हमारी है, आयातित नहीं है।

गोगो हम अपनेऽऽऽ चंडऽऽ प्रचंडऽऽऽ घमंड को—

चाचा खंड-खंड पाखंड को—अपनी गरमी और ठंड को—अंडबंड को—

गोगो ऽऽऽखोल करऽऽऽ दिखलाएँगे!

चाचा गर्व से कहो, हम आवाज करते हैं और उस आवाज को चारों दिशाओं में फैलाते हैं।

गोगो ऽऽऽ गर्व से ऽऽऽ कहो, हम ऽऽऽ हकलाते हैं। अपनीऽऽऽ आवाज को ऽऽ ब्रेक करते हैं ऽऽ रो—रो—रोकते हैं।

चाचा गर्व से कहो, हम ध्वनि विस्तारक हैं। यानी लाउड स्पीकर!

गोगो ऽऽ गर्व से कहो, हम ऽऽ ध्वनि-अवरोधक हैं। ऽऽऽ आवाज के ऽऽऽ स्पीड ब्रेकर हैं!

चाचा जो कुछ कहेंगे, गर्व से कहेंगे।

गोगो ऽऽऽ शरमाने की ऽऽ क्या बात है!

चाचा गर्व से कहेंगे कि हमारे पास गर्व करने लायक कुछ नहीं है।

गागो हम ऽऽऽ घत हैं—
चोचा स्वत स्फूर्त है, लेकिन अमूत ह !
[दोना जड हा जात है।]
बोधिवक्ष दोनों जडभरत, दोनों गुमराह
अपन मुह मिया मिट्ठू
अपन मुह वाह वाह
अभी चल रहे थ, अभी पत्थर हो गय
खाना चाहत थे सुजाता की खीर
और एकाएक
उस खीर से डर गये
इनका क्या इलाज है ?
इनके भीतर किसकी आवाज है—
जो चाचाचो और गागागा बोलती है ?
उसकी प्रतिध्वनि
राजभवन की दीवारा पर
प्रेतात्मा-सी डोलती है !
चोची और गोगो (सिर्फ होंठ हिलते हैं) हम जडभरत—अनवरत—
एखाने धरत ओखाने उल्टी करत—फूक फूक पाव धरत,
फिर भी यहाँ मरत, वहाँ मरत—अनवरत—हम जडभरत !
बोधिवृक्ष लकिन सुजाता ने तुम्हार लिए खीर तयार कर दी है।
गोगा ऽऽऽ सुजाताऽऽऽ यानीऽऽऽ डेमोक्रेसी।
चाचा हम पकी-पकाई खार ही खात है।
गागा ऽऽऽ सुजाताऽऽऽ कीऽऽऽ खीर भीऽऽऽ हमी खाएँगे—
चाचा लेकिन—बट—उसम गौमूत्र मिला कर—
गागा ऽऽऽ पवित्र ऽऽऽ बना कर—
चाचा साम्प्रदायिकता की केसर जातिवाद के काजू क्षेत्रीय
सकीर्णता की किशमिश और पुत्र-पौत्रवाद की मिसरी

डालेंगे उसमे !

गागा जबऽऽऽ खूबऽऽऽ मीठी हो जायगी—

चाचा तो एक बार फिर उसमे गोमूत्र मिलाएँगे—

गोगा ऽऽऽ बडे बडे चमचेऽऽऽ अदर डालकर ऽ.ऽ हिलाएँगे—

चाचा फिर पाँच साल तक सुजाता की खीर खाएँगे !

गागा हमऽऽऽ सिद्धार्थ नही—

चाचा कि एक दिन मे ही हमारा पेट भर जाय !

[तभी काके और लाले चिल्लाते हुए आते हैं।]

काके साध्य समाचार—आज की ताजा खबर—

लाले ईवनिंग न्यूज—हाट न्यूज—

काके नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी के ससदीय दल ने गुलजारसिंह कनातवाला को अपना नेता चुना !

लाले न्यू लीडर—जीएम कनातवाला !

काके गुलजारसिंह कनातवाला देश के नये प्रधानमत्री बनेंगे !

लाले न्यू प्राइम मिनिस्टर—कनातवाला !

काके कल सुबह कनातवाला देश के दसवें प्रधानमत्री के रूप मे शपथ लेंगे ! दस नबरी ! दस नबरी !

लाले काके ! जिस खबर को हम बेच रहे है, क्या वह सचमुच सच्ची है ? (एकदम हतप्रभ) गुलजारसिंह कनातवाला प्रधानमत्री कैसे बन गया ?

काके उसे किसने छुड़ाया ?

लाले हम उसे अगवा कर लाये थे। वह हमारी कैद मे था। छूट कैसे गया ?

काके हम तो उसे मौत के घाट उतारना चाहते थे—

लाले वह हमारा बधक था !

काके या या हम उसके बधक थे ! हम उसकी कैद मे थे !

बोधिवृक्ष : यू प्राइम मिनिस्टर—नमोस्तुते !

कोरस : नाने, चाचा, मामो : हे बोधिवक्ष हमें ज्ञान दो, हमें बतलाओ कि हम क्या करें ? हे बोधिवक्ष : पापियों के वकील संसार के सबसे बड़े बैरिस्टर—नमोस्तुते !

बोधिवक्ष : यू प्राइम मिनिस्टर—नमोस्तुते ! नयी कैबिनेट का नया रजिस्टर—नमोस्तुते ! खादी की जगह पोलिएस्टर—नमोस्तुते ! हे दर्शक, मैं बोधिवक्ष—सत्यनिष्ठा से कसम खाकर घोषित करता हूँ कि अभी नाटक खत्म नहीं हुआ है। अभी शेष है सारे-तमाम छल और बल ! अभी तौलना है पूरा दलदल ! *कौन रहा विफल कौन हुआ सफल !* हम देख रहे हैं हम देखेंगे हम देखना है कि क्या होगा कल ? तब तक—सिर्फ दस मिनट के लिए इंटरवल !

[*किसी टीवी 'धारावाहिक' के तेज संगीत के* साथ अंधकार ।]



॥ उत्तरार्ध ॥

[शोकपूर्ण संगीत। मंच के अंधकार में भटकते और विलाप करते हुए काके, लाले, नीनी और छीछी।]

काके हटाओ यह अंधकार!

छीछी तुरन्त हटाओ। फौरन!

लाले, नीनी हम रोना चाहते हैं।

काके हम अंधकार में रोना अपना अपमान समझते हैं।

छीछी हम ऐसे आंसुओं को व्यर्थ मानते हैं, जिन्हें दर्शक न देख सकें।

लाले, नीनी हम खुद ही अंधकार को हटायेंगे। (हाथों से मंच का अँधेरा हटाने की कोशिश करते हैं।)

काके, छीछी हम अंधकार को हटा कर ही रोना शुरू करेंगे।

लाले हम नयी रोशनी लायेंगे! (मंच रौशन होने लगता है।)

काके और फिर दहाड़ मार कर रोयेंगे।

नीनी, छीछी गायेंगे।

लाले गाल बजायेंगे!

काके करेंगे घमासान विलाप—

नीनी मेटेंगे मन का संताप—

छीछी अपने आप!

काके, लाले नीनी, छीछी हम दुनिया को दिखला देंगे कि हमारे पास भी आँखें ह और उनम आंसू निकल सकते है।

काके हम यह साबित कर देंग कि हम गा-बजा कर—

नीनी नाच नाच कर—

लाले अपने नाटककार की मत्यु पर रो सकत है।

छीछी उसकी कडवी कसैली-मैली यादो मे खो सकते हैं।

[एक ऊलजलूल फिल्मी सगीत मे डूबते-उतराते-नाचते रोते हुए चारो गाते हैं।]

नीनी याद आ रही है, तेरी याद आ रही है—

छीछी तुम को पुकार मेरा प्यार, मेरे नाटककार !

काके याद म तेरी जाग जाग के हम, रात दिन करवटें बदलत है—

लाले भूली हुई यादो मुझे इतना न सताओ, अब चन से रहने दो, मेरे पास न जाओ —

नीनी आऽऽजा रे परदेसी, मैं तो कब से खडी इस पार—

काके बेकरार करके हम यू न जाइये, आपको हमारी कसम लौट आइये—

छीछी अभी ना जाओ छोडके कि दिल अभी भरा नही—

लाले, नीनी तुम्ह याद होगा कभी हम मिले थे—

काके, छीछी याद किया दिल ने कहा हो तुम, प्यार म पुकार लो जहा हो तुम—

चारो साथ साथ (बेसुरे होकर) टूटे हुए ख्वाबो ने अब हमको य सिखाया है यो रोना सिखाया है दिल ने जिसे पाया था—वो एक था नाटककार आखो ने गँवाया है—

मन तडपत हरि दरशन को आज
मोरे तुम बिन बिगडे सगरे काज

काके मन तडपत हरि दरशन को आज !

लाले इंटरवल में पहले का नाटक देख कर कुछ लोग हो गये नाराज !

नीनी उन्हें लगा कि इस नाटक में तो पड़ रही है सब पर गाज !

छीछी यह तो बहुत बुरी बात है—

नीनी कि एक अदना और पिदना सा नाटककार—

छीछी उड़ाये राजनीति के मूल्यवान सिद्धान्तों का मजाक—

काके उन पर बिखेरे खाक !

नीनी सब जानते हैं—

लाले कि प्रधानमंत्री के पद की होती है सबसे ज्यादा धाक—

नीनी लेकिन नाटककार ने तो नाच ली—

छीछी शीर्षस्थ सत्तापुरुष की नाक !

काके लिखा गया क्यों एक नाटक ऊलजलूल—

लाले उसे तुरत किया जाना चाहिए—

काके आमूल—चूल—निर्मूल !

नीनी नाटक ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा—

छीछी कुछ लोगों का भारी गुस्सा चढ़ा !

काके वे होते गये नाराज और नाराज—
मन तडपत हरि दरशन को आज
मोरे तुम बिन बिगडे सगरे काज !

लाले वे कुछ नाराज लोग—

नीनी जिनकी जन्मकुंडनियों में पड़े और खड़े हुए थे कितने ही राजयोग —

छीछी मंत्रणा करने लगे—

काके कि ऐसे शासन-अनुशासन प्रशासन विरोधी नाटककार को नहीं रहना चाहिए जिन्दा !

लाले वरना हमारे प्राइम मिनिस्टर, एडीशनल प्राइमिनिस्टर—

नीनी ज्वाइंट प्राइम मिनिस्टर—

छीछी डिप्टी प्राइम मिनिस्टर

काके असिस्टेंट प्राइम मिनिस्टर की साख को पहुँचेगा धक्का—

लाले हम सब होंगे शर्मिन्दा !

नीनी ऐसा नाटककार रहे ही क्यों जिन्दा ?

छीछी वह तो पृथ्वी पर भार है—

काके हमारे शानदार-समृद्ध रंगमंच को ऐसे घटिया नाटककार
की क्या दरकार है ?

लाले अगर कोई अच्छा नाटककार है—

नीनी तो वह लिखे ऐसा नाटक, जिसमें प्रधानमंत्री की तुलना
हो राजा इन्द्र से—

छीछी मंत्रियों को कहा जाय देवता-समान—

काके अफसरों का उसमें हो सतत गुणगान—

लाले पग पग पर हो दलालों के पुण्य और शौर्य का बखान !

नीनी उद्योगपतियों—सेठों को लिखा जाय, कृपानिधान—

छीछी और उनके मुनीमों को लिंकन और लेनिन से ज्यादा
महान !

काके लेकिन इस घटिया नाटककार ने तो भरपूर घटियापन
दिखलाया—

नीनी विपक्ष के विराटनता की इमेज को भी क्षतिग्रस्त बनाया—

लाले वामपंथियों को चिढ़ाया —

छीछी दक्षिणपंथियों को व्यंग्य-बाणों में फँसाया—

काके शब्दों का ऐसा चक्रव्यूह रचाया—

लाले कि उसमें सारे सरकारी तंत्र को सरासर गलत ढंग से
उलझाया !

काके, लाले नीनी और छीछी

हम माई-बाप दर्शक !

अब आपको क्या बतलाएं, क्या सुनाएं—
यह नाटक आधा ही लिखा गया था
आधा ही देखा गया था
कि कुछ नाराज-उत्तेजित-सत्ताभोगी मानसरोगी लोग
नाटककार को पकड़ कर ले गये।
चटपट एक अदालत का गठन हुआ
झटपट लगाये गये आरोप
घटाटोप!
इससे पहले कि नाटककार कुछ समझे—
सुना दिया गया फैसला

कावे नाटककार ने किया है खड़-खड हमारा पाखंड, लिखा है सब कुछ ऊलजलूल और अंडबंड—उसे तत्काल दिया जाये मत्युदंड।

[एक खामोशी। दहशत।]

लाले (लंबी साँस लेकर) तब—कुछ बुद्धिजीवियों ने—

काके नये प्रधानमंत्री गुलजारसिंह कनातवाला से अपील की—

नीनी कि आप प्राणदंड को उम्रकैद में बदल दें, कुछ दया दिखलाएं।

छोछी प्रधानमंत्री यह सुन कर मुस्कराये—

लाले बोले—मत उड़ाओ न्याय का उपहास! ऐसे घटिया लेखक को मैं नहीं दूंगा आजीवन कारावास! मोहे आपकी बातें सुन-सुन आवे हाँसी, नाटककार को तुरत दी जायेगी फाँसी।

काके और 'ओपन' गवनमेंट ने लेखक को 'ओपनली' फाँसी देने का निर्णय लिया।

लाले न्यू प्राइम मिनिस्टर ने कहा—हम टीवी को भी इसी क्षण आजाद करते हैं! और—टीवी आजाद हो गया!

ताबे इस समय, टीवी के फर्स्ट चैनल पर नये प्रधानमंत्री का शपथ ग्रहण समारोह दिखलाया जा रहा है—

लाले और दूसरे चैनल पर, इस नाटक के लेखक को फाँसी पर चढ़ाये जाने का पूरा हाल, पूरा ब्यौरा!

नीनी (रोमांचित होकर) लाइव टेलीकास्ट!

छीछी हाय, मुझे तो बड़ा एक्साइटमेंट हो रहा है। चलो टीवी देखें!

काबे हम प्रधानमंत्री के आभारी हैं कि जिस नाटककार का एक भी नाटक कभी टीवी से टेलीकास्ट नहीं हुआ, आज उसके मृत्युदंड को, डिटेल्स के साथ, पूरा टेलीकास्ट किया जा रहा है। टीवी और मीडिया की स्वतंत्रता के लिए यह सुखद घटना ऐतिहासिक है।

लाले हम अपने देशवासियों से आग्रह करते हैं कि जब फाँसी का अन्तिम दृश्य सम्पन्न हो जाये तो वे दो मिनट का मौन रखने की बजाय खूब ज़ोर से चिल्लाएँ और 'प्रधानमंत्री जिन्दाबाद' के नारे लगाएँ। यह कहना न भूलें कि टीवी की आजादी का अहसास कराने वाला ऐसा शुभ दिन बार-बार आये! बार-बार आये!!

नीनी आओ हम फैला दें पुनः अंधकार—

छीछी क्योंकि फाँसी पर चढ़ाया जा रहा है हमारा नाटककार!

चारा चलो हम टीवी पर देख लें उसे अंतिम बार!

[हाथों से अंधकार फैला देते हैं। दो नकाबपोश गरजते हुए आते हैं।]

नकाब० एक यह गलत है—

नकाब० दो यह एक अंतराष्ट्रीय साजिश है—

नकाब० एक कि मरे केवल एक बेहूदा नाटककार—

नकाब० दो और फैला दिया जाये चारों दिशाओं में अंधकार!

नकाब० दो उसने बरसों पुरानी सरकार को उखाड़ फेंका।

नकाब० एक वेरी बैड वेरी बैड यह तो ध्वंसात्मकता है।

नकाब० दो हमारी दूसरी खोज यह, कि जिस नाटककार को फांसी दी जा रही है—वह एक जनविरोधी, जनतंत्रविरोधी, समाजविरोधी, परिवारविरोधी, सरकारविरोधी, स्त्रीविरोधी, बालविरोधी, वृद्धविरोधी, अपराधी तत्त्व था!

नकाब० एक उसे इसलिए फांसी नहीं दी जा रही है कि उसने रिवोल्यूशनरी साहित्य लिखा।

नकाब०-दो उसे इसलिए फांसी दी जा रही है कि उसने कई सुंदर स्त्रियों को घोर अश्लील और गंदे प्रेमपत्र लिखे।

नकाब०-एक आह, माई गॉड!

नकाब० दो वो अव्वल दर्जे का चीट और फ्रॉड!

नकाब० एक वह भयंकर जालसाज और क्रिमिनल!

नकाब० दो वो हिप्नॉटिज्म का जानकार!

नकाब० एक पारंगत मायाजीवी!

नकाब० एक उसने जवान तो जवान, बूढ़ी औरतों को भी ठगा—

नकाब०-दो उनकी वृद्धावस्था को बहकाया।

नकाब०-एक उसने एक आदरणीया वृद्धा को एक गोली मुंह में रखने के लिए कहा—

नकाब० दो गोली जीभ पर रखते ही वृद्धा हो गयी स्वीट सिक्सटीन!

नकाब० एक उसने अपने पद्मभूषण पचहत्तरवर्षीय पति को तलाक दे दिया और भाग गयी जर्मनी से आये एक अठारहवर्षीय टूरिस्ट के साथ!

नकाब०-दो इस तरह नाटककार ने किया चुपके से विश्वासघात!

नकाब० एक वह तांत्रिक, मांत्रिक और यांत्रिक—देशद्रोही नाटककार!

नकाब० दो उसने एक रिटायर्ड टॉप सेक्रेटरी को नीलम की अंगूठी पहना दी—

नकाब०-एक वह अफसर अमेरिका गया और सीआईए का डाइरेक्टर बन गया।

नकाब० दो अच्छी भली खूबसूरत बेनजीर भुट्टो को नाटककार ने एक ताबीज दिया—

नकाब० एक और उसने शादी कर ली।

नकाब०-एक बतलाइए, यह कोई बात हुई?

नकाब० दो इस तरह तो तमाम पालिटिकल सुन्दरियां शादी कर लेंगी।

नकाब०-एक यही नहीं, नाटककार ने अवैध बच्चों के पक्ष में प्रचार किया—

नकाब०-दो समाज पर दबाव डाला कि वह उनकी परवरिश करे।

नकाब० एक उसका यह आचरण समाजविरोधी था—

नकाब० दो क्योंकि फिर अवैध बच्चे खूब पैदा होने लगे—

नकाब०-एक मां-बाप को उनके पालन-पोषण की चिन्ता नहीं रही।

नकाब० दो नाटककार ने बहुतेरे पाप किये—

नकाब० एक उसने एक बुढियाई हुई वेश्या को सोशल वेलफेयर बोर्ड की मेंबर बनाने के लिए आंदोलन छेड़ा—

नकाब० दो जरा गौर कीजिए, बुढियाई हुई! अरे, जवान होती तो भी कोई बात थी!

नकाब०-एक कम से कम मन्त्रीजी का दिया गया इंटरव्यू तो 'क्वालिफाई' कर लेती!

नकाब०-दो इस तरह सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है—

नकाब० एक कि नाटककार को जो फांसी हो रही है—

नकाब०-दो वह उसके जघन्य अपराधों के कारण—

नकाब० एक पापों के कारण।

नकाब०-दो यह प्रचार एक सुनियोजित षड्यन्त्र है कि नाटककार विद्रोही है—

नकाब० एक और उसे एक क्रांतिकारी नाटक लिखने के कारण फांसी दी जा रही है !

नकाब०-दो (हांफता हुआ) इटस टू मच नकाबपोश नवर वन !

नकाब० एक हां बोलते-बोलते मेरा तो गला बैठ गया !

नकाब० दो लेकिन, हमने अपनी ड्यूटी बजा दी।

नकाब० एक नकाबपोश नंबर ट तुम जानते हो—प्रधानमंत्रीजी कवि है। उन्होंने नाटककार की मृत्यु पर, कविता में शोक-संदेश लिखा है !

नकाब० दो सुनाओ, वह कविता सुनाओ ताकि यह देश शोक के आलोक में डूब जाय !

नकाब० एक (जेब से एक कागज निकाल कर) बहुत प्रेरणादायी कविता है ! (पढ़कर सुनाता है) हे नाटककार, तुम्हारी मृत्यु पर मुझे दुःख है, किन्तु इस दुःख में भी एक सुख है, मैंने सब कुछ किया है—देशहित में ! मैं तो देश का हूँ, खाता हूँ सूखे चने पहनता हूँ ढीला पाजामा, हरे कृष्णा, हरे रामा !

[दृश्यलोप। अचानक दौड़ते हुए घोड़ों धड़धड़ाती हुई मोटर साइकिलों और जीपों की आवाजें। पुलिस की सीटियां और "पकड़ो, पकड़ो !" का शोर। फिर चुप्पी। फिर 'राष्ट्रीय जल्लाद—जिंदाबाद' के उत्साह पूर्ण नारे। नारों के बीच मंच पर उतरती हुई रोशनी। बेतहाशा हँसते हुए काले, नीली लाल और छीछी आते हैं।]

काले, लाले आ-हो-हो-हो हो-हो हा-हो हो !

नीली, छीछी आ-हा हा-हा हा-ही ही-ही-ही !

चारों अरे कोई हमारी हँसी रोको ! आहा हा हा ही-हा-हा !

काले ओहो-हो, पुलिस को फोन करो !

छीछी और —उसके 'एंटी-लाफ्टर दस्ते' को बुलाओ। हा हा हा —हमारी हँसी रोको—

लाले, नीनी अबे नाटककार—हा हा हा ही ही ही—

काके छीछी तूने पहले नाटक लिख लिख कर हमे हँसाया —हा हा हा ही ही ही —फिर तूने हा हा हा ही ही ही—

लाले, नीनी फिर तूने—अपनी फासी के सीन मे भी हमे खूब हँसाया, हा हा हा हा !

काके तू तो नही मरा —हा हा हा हा—

नीनी लेकिन तूने हमे हँसा हँसाकर मार डाला—ही ही ही ही—

लाले हे दशक भाई !

छीछी हे दशक-बहना !

लाले आप तो यहाँ बैठे रहे और उधर—

छीछी नाटककार की फाँसी मे हगामा हो गया !

काके हम टीवी म सब कुछ देखकर आए है—

नीनी सब कुछ दिखलाया जा रहा था—लाइव टेलीकास्ट !

लाले हरेक दृश्य—

छीछी हरेक मूवमेट—

नीनी हरेक एक्सप्रेशन —

काके बडा बढिया सेट था फाँसी का, जरूर नेशनल स्कूल आव ड्रामा ने डिजाइन किया होगा !

लाले लेडीज एड जेंटलमैन, अब आपके लिए एक बुरी खबर यह है—

काके, नीनी, छीछी कि नाटककार को फाँसी नही हुई !

लाले हालाँकि होनी थी, जरूर होनी थी !

काके अब वह जिन्दा बच गया है, और फिर बुरे-बुरे नाटक लिखेगा !

लाले मैंने तो सोचा था कि अब थियेटर बद ! श्री राम सेंटर म

सामने छोले भटूरे का खोमचा लगाऊँगा।

काके मेरे चाचा का तो कच्ची दारू का ठेका है। उन्होंने मुझे बुला लिया था। पीने को मिलती और बेचने को भी—

लाले लेकिन नाटककार को तो फाँसी नहीं हुई। वह बच गया।

काके उसे बचा लिया गया।

मीनी छुडाने वाले उसे छुडा ले गये।

छोछी भगाने वाले उसे भगा ले गये।

काके हमने टीवी पर सब कुछ साफ साफ देखा।

लाले फाँसी का वो फड़कता हुआ माहौल और वो फजीहत—हा हा हा हो हो ही (चारों हँसते हैं।)

[हड़बड़ाहट में नकाबपोश—एक और दो का प्रवेश। दोनों कुछ क्रोधित, कुछ भयभीत। वे मंच के हर कोने की तलाशी लेते हैं। तभी मीनी 'वन-टू-थ्री फोर' बोलती-बुदबुदाती हुई कसरत करने लगती है। काके, छोछी और लाले उसका साथ देते हैं। पृष्ठभूमि से व्यायाम के लिए उपयुक्त संगीत उभरता है।]

नकाब०-एक क्या था यहाँ,है ? वो तुम्हारा नाटककार !

नकाब०-दो हम उसे ढूंढ निकालेंगे। भागकर जायगा कहाँ ?

नकाब०-एक प्रधानमंत्री ने सीमाएँ सील करने के आदेश दे दिए हैं।

नकाब०-दो पड़ोसी मुल्कों को खबर कर दी गयी है।

नकाब०-एक यह उग्रवादियों का काम है—

नकाब०-दो उन्होंने ही नाटककार को फाँसी के तख्त पर से छुड़ाया है।

काके वन-टू-थ्री फोर। आगड़-बागड़ दोनों चोर ! अब एक्सरसाइज—गोरखालैंड !

नकाब० एक कहीं तुम लोग तो इस साजिश में शरीक नहीं हो?

नकाब० दो शक्ल-सूरत से तुम बिल्कुल ठीक नहीं हो।

नकाब० एक थियेटर वाले वैसे भी होते हैं उचक्के।

नकाब०-दो हरामखोर पक्के।

लाले एक-दो-तीन चार। आजू-बाजू दो गद्दार। अब एक्सरसाइज—मारखंड!

नीनी अब एक्सरसाइज—मार्च—जाफना, इस्लामाबाद, काठमांडो, ढाका!

नकाब०-एक इस बोरे में क्या है?

नकाब०-दो देखो, वो ससुरा नाटककार इसी में न छुपा हो।

छीछी वन-टू वन-टू वन-टू-वन-टू!

नीनी ॲंटी-बॅंटी फोर-ट्वॅंटी-ॲंटी-बॅंटी फोर-ट्वॅंटी!

नकाब० एक (तड़ातड़ छींककर) ओफ्फो, बोरे में—मिरची—है—मिरची! लाल मिरची!

छीछी एबीसीडी—ईएफजी—

नीनी उसमें से निकले गांधीजी!

काके गांधीजी ने चरखा काता—

लाले उसमें से निकले नेहरू चाचा!

छीछी नेहरू चाचा ने पहनी खादी—

नीनी उसमें से टपक पड़ी आजादी!

काके आजादी का खेल निराला—

लाले प्रगट भये फिर कनातवाला!

नकाब०-दो लगता है, ये आर्टिस्ट तो देशभक्त हैं! पीएम का नाम ले-लेकर उछल रहे हैं!

नकाब०-एक तो उस नाटककार को कैसे पकड़ें? कहाँ खोजें?

नीनी श्रीलंका जाओ! हो सकता है, वह तमिल चीतों के साथ मजे से डोसा खा रहा हो!

छीछी पटना जाओ ! मैं वी—वो सीएम की नींद में पलीता लगा रहा हो !

काके भागलपुर जाओ ! संभव है वह सड़कों पर लाशें गिनवा रहा हो !

लाले दिवराला जाओ ! शायद वह वहां किसी विधवा को सती बनने के लिए उकसा रहा हो !

नवाब० एक (नोटबुक में लिखता हुआ) थैंक्यू, थैंक्यू, हम सब जगह जाएँगे !

नवाब० दो आप लोगों ने हमारी बड़ी मदद की, धन्यवाद, शुक्रिया ! अब हम नाटककार को जरूर पकड़ लेंगे। (दोनों जाते हैं। व्यायाम संगीत बंद हो जाता है। काके, लाले, छीछी और नीनी निढाल पड़कर सुस्ताने लगते हैं।)

काके ओफ्फो ! कई वर्षों के लिए इकट्ठी कसरत हो गयी आज !

लाले पहले हम हँस हँस कर मरे !

छीछी फिर फँस कर मरे !

नीनी कुछ भी हो, जिस तरह नाटककार को ऐन फाँसी के वक्त छुड़ा लिया गया, उसे देखकर मजा आ गया !

काके हाँ फाँसी का फन्दा उसके सिर पर झूल रहा था।

लाले जल्लाद ने मुंह पर काला कपड़ा डाल दिया था —

छीछी नाटककार की पतलून पूरी भव्यता से, भीगी हुई थी !

नीनी वह काँप रहा था—

काके जल्लाद हाँफ रहा था—

छीछी कि तभी भीड़ को चीरता हुआ एक घुड़सवार आगे आया—

लाले उसके पीछे छह मोटर साइकिलें !

नीनी और दो जीपें !

काके जीपें तीन थी और उनमे करीब दस-ग्यारह बंदे थे। मैंने टीवी पर साफ देखा था सब कुछ !

छीछी सब कुछ नाटकीय था !

लाले नाटककार की फाँसी मे भी नाटक !

नीनी घुड़सवार ने झपट कर नाटककार को अपनी तरफ खींचा—

काके नाटककार चीखा कि शायद फाँसी का फंदा उसे खींच रहा है !

छीछी घुड़सवार घोड़े पर डाल कर ले भागा नाटककार को !

लाले किसी की समझ मे नहीं आया कि हो क्या रहा है !

काके समझ में तब आया, जब एक मोटर-साइकिल वाले मुच्छल ने फाँसी का फंदा जल्लाद के गले मे डाल दिया—

नीनी क्या उसने रस्सी भी खींच दी थी ?

काके पता नहीं, उस वक्त एकदम भगदड़ मच गयी और टीवी का स्क्रीन थरथराने लगा और लाइव टेलीकास्ट बन्द हो गया !

छीछी वाकई बहुत गड़बड़ हो गया।

लाले अगर नाटककार के बदले जल्लाद को फाँसी पर चढ़ा दिया गया—

काके तो हम इसे घोर अन्याय मानेंगे !

नीनी हमें बहुत-बहुत अफसोस है—

छीछी लेकिन इसमें किसका दोष है ?

काके क्या यह उचित न होगा कि हम जल्लाद को श्रद्धांजलि दें।

लाले नाटककार के लिए मैंने एक ड्राफ्ट तैयार किया था श्रद्धांजलि का—अब हम उसका इस्तेमाल जल्लाद के लिए कर सकते हैं !

नीनी यह ठीक है। इससे हम अपने दिल का बोझ हल्का कर सकेंगे।

छीछी दशकों को भी महसूस होगा—

काके कि हमे पूरी हमदर्दी है एक गरीब जल्लाद से।

लाले सोसाइटी के वीकर सेक्शन से।

नीनी दलित से, पिछड़े हुए वर्ग से, अल्पसंख्यक से।

छीछी हां, जल्लाद अल्पसंख्यक होते हैं क्योंकि समाज वे थोड़े ही होते है—

काके गिने चुने। प्रतिभावान।

लाले प्रकाशमान। मृत्यु समान।

नीनी हे ईश्वर, उस जल्लाद को—

छीछी जिसे नाटककार का सब्स्टिट्यूट मान कर—

काके डुप्लिकेट अनुमान कर—

लाले डमी कंडीडेट जान कर फांसी दे दी गयी—

नीनी शायद दे दी गयी—

छीछी तो हम उसकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हैं।

काके कोई अच्छी प्रार्थना अथवा आरती—

लाले हमें इस वक्त याद नहीं है।

नीनी हे प्रभो, हे गणपति बप्पा मोरिया।

छीछी हे संतोषी माता। हे झुंझनू की राणी सती।

काके हे बाबा रामदेव। हे तिरुपति। हे राजीव। हे सतीश। हे अमिताभ।

लाले हे विश्वनाथ। हे कमलापति। हे शंकरानंद। हे नरसिंह। हे विट्ठल।

नीनी हे मोनी माधव। हे कल्पनाथ। हे जगन्नाथ। हे वीरभद्र। हे दिनेश। हे नटवर।

छोठी हे वीरेंद्र ! हे करुणानिधि ! हे अटल बिहारी ! हे सुरजीत ! माँ विजया !

काके हे लालकृष्ण ! हे नबूदिरीपाद ! हे ज्योतिपुंज ! हे राजमोहन !

लाले हमारा हृदय शोक-संतप्त है—

नीनी उसे सांत्वना दो, धैर्य बँधाओ ! हमें अप्पूघर की सैर कराओ !

छोठी हमारा मन विचलित है, हमें सुमार्ग दिखलाओ !

काके हमें भी जनपथ से उठा कर राजपथ ले जाओ !

लाले और इंडिया गेट पर आइसक्रीम खिलाओ !

नीनी वहाँ की चाट भी बहुत जायकेदार होती है—

छोठी हाय, मेरे तो मुंह में पानी आ गया !

काके या खुदा ! परवरदिगार ! गद्दाफी और गोर्बाचेव !

लाले हे यीशु मसीह ! ऑलमाइटी जार्ज बुश ! गाडेस थैचर !

नीनी गिव अस पीस ! वी वांट पीस !

छोठी सिम्पल—साधारण पीस ! डाइजेस्टिबल—पाचक पीस !

काके लचीली—फ्लेक्सिबल पीस ! सुरीली—म्युज़िकल पीस !

लाले कन्वर्टेब्ल—डिवेटेब्ल—मिज़रेब्ल—मस्क्युलर पीस !

चारों ओ शांति—विश्रांति—स्काच—वोदका—कोन्याक—चियांति—ओ शांति—विश्रांति !

[दृश्यलाप । पुनः उजाला होने पर, अपनी नयी पोशाक में बोधिवृक्ष । केंद्रस्थ । सिर पर फर की टोपी । शानदार अचकन और चूड़ीदार पायजामा । एक कंधे पर लाल, दूसरे पर भगवा झंडा खुसा हुआ । गले में लटकती हुई 'भारतीय दंड संहिता' ! कमर में झूलता हुआ हँसिया-हथौड़ा डंडा-

रिवाल्वर, कई पुडियाओं मे पान मसाला—शेर का चित्र—पूछ की तरह हटर—उसकी नोक पर बॉल पेन।]

बोधिवृक्ष हम कौन थे, क्या हो गये हैं—
और क्या होंगे अभी
आओ विचारें और पकड़ें—
प्रश्न औ' उत्तर सभी।
मेरी आ ना रहे, मेरा सर ना रहे
सामा ना रहे, ना ये साज रहे
मेरी मौज रहे, मेरी मस्ती रहे
और हिन्द पे मेरा राज रहे!

[नकाबपोश—एक और दो, बदहवास-से आते हैं।]

नकाब० एक नही मिला, वह हमे कही नही मिला।

नकाब०-दो हम उस फरार नाटककार को गिरफ्तार नही कर पाये।

नकाब० एक हमने उसे यत्र तत्र ढूढा।

नकाब०-दो सर्वत्र ढूंढा—

नकाब०-एक एक गुप्तचर ने मुझे बतलाया—वह साउथ अफ्रीका चला गया है।

नकाब०-दो एक पत्रकार मेरे कानो मे फुसफुसाया—वह जापान पहुँच गया है।

नकाब० एक पड़ा होगा—किसी शीशी को बगल मे दबा कर!

नकाब०-दो अब उसे हमारे 'मीसा' का डर नही!

बोधिवृक्ष खामोश! हम अपने परम प्रिय नाटककार पर लाछन का एक शब्द भी नही सुनना चाहते! हम उसके प्रशसक हैं, मुरीद है, एडमायरर हैं!

नकाब० एक नकाबपोश नंबर टू, यह तो त्रिभाषा फार्मूले मे बोल रहा है!

नकाब०-दो नकाबपोश नवर वन, लगता है—यह तो वही है। हमारी पहचान म गलती हुई!

नकाब० एक हे बोधिवक्ष, हमे माफ करें।

नकाब० दो अभयदान दें। हे प्रधानमत्री जी, अपने सूचना मत्रालय—

नकाब०-एक और खुफिया ब्यूरो की सदा सदा रक्षा करें।

नकाब० दो हालांकि हम नाकामयाब है—

नकाब० एक लेकिन बानकाब तो है!

बोधिवक्ष निभय रहो। मैं तुम्हारा सदा पोषण और शोषण करता रहूँगा।

दोनो हम मतिमद, आपके अहसानमद है।

बोधिवृक्ष मैं तुम्हे बतलाना चाहता हूँ कि नाटककार कही नही गया।

दोनो (चकित) कही नही गया!

बोधिवक्ष न भागा, न फरार हुआ। वह तो शुरु से हमारी अचकन मे है।

दोनो अचकन के नीचे कुर्ता, कुर्ते के नीचे बनियान, बनियान की ढलान पर अडरवियर—और उसम बाओ'बोउ

बोधिवक्ष हम उस देश के वासी हैं, जिस देश मे गगा बहती है और जहां की नब्बे प्रतिशत जनता भूखी-नगी रहती है। इसलिए मैं भी अचकन के नीचे कुछ नही पहनता। सरासर दिगबर!

दोनो हे दिगबरनाथ, सितमबर और दिसबरनाथ, आपकी जय हो!

बोधिवृक्ष चूकि मैंने प्रेस को और हर नागरिक को जानकारी का हक दिया है, इसलिए मैं यह जानकारी देना अपना पवित्र कत्तव्य समझता हूँ कि मैंने ही नाटककार को छुडाया।

दोनो आपने छुडाया!

बोधिवृक्ष अपनी कमाडो फोर्स व खास लोग मैंने उसे छुडाने के लिए

भज !

गोरा आपने ही फाँसी का हुक्म सुनाया और फिर आपने ही छुड़ाया !

बोधिवृक्ष मामला एक नाटककार का था, इसलिए मैं निष्पादन का ड्रामेटिक माना पैंटम्पिक बनाना चाहता था ! (रुक कर) इसी नाटककार से नाटकम में लोगों की नए सिरे से दिलचस्पी पैदा हुई—वरना टीवी सीरियलों ने थियेटर वालों को उपेक्षा, उपहास और उपयोग का पात्र बना लिया है ! मैं आर्यावर्त का पहला प्रधानमंत्री हूँ, जिसने सर्वोच्च प्राथमिकता के रूप में—रंगमंच के पुनरुत्थान पर ध्यान दिया और नाटककार को फाँसी की सजा सुना कर एक सेंसेशन—अर्थात् इस योजना के इम्प्लीमेंटेशन का वातावरण बनाया !

दोनो प्रभु—आपका प्रवचन बहुत बारीक है। यानी, पान चबाने हुए आपके होठों की पीक है !

बोधिवृक्ष मैं बोधिवृक्ष उर्फ गुलजारसिंह कनातवाला उर्फ ए वलनोन पोएट ऑव हिन्दी उर्फ प्राइम मिनिस्टर ऑव आर्यावर्त, यह कभी नहीं चाहूँगा कि किसी लेखक को फाँसी दी जाये—अगर दी जाये तो सबसे पहले मुझे दी जाये !

दोनो सर यह आप क्या कह रहे हैं ? थूकिये, ऐसी बात अपने मुँह से थूकिये—इस हथेली पर थूकिये—यहाँ—प्लीज—यहाँ—

बोधिवृक्ष ओके, तुम लोग कहते हो तो थूक देता हूँ ! किन्तु मैं नहीं चाहता कि किसी लेखक को फाँसी देकर शहीद बनाया जाय, हिस्ट्री में अमर किया जाय ! अगर उसे मारना है तो मृत्युदंड से नहीं, सॉफ्टड्रिंक पिलाकर मारो !

दोनो मसलन—

बोधिवक्ष मसलन की फिसलन यह कि मैंने नाटककार को, मानवा-धिकार आयोग का अध्यक्ष बनाकर, कबिनेट मंत्री का दर्जा दे दिया है। अरे भाई, अपनी आवाज को उठाने के लिए एक प्रॉपर प्लेटफाम भी होना चाहिए कि नहीं? वह एक ऊँचे खयालो का नाटककार है—अब उसके पास कोठी है—हाटलाइन फोन है—एयरकंडीशंड कार है—ड्राइंगरूम मे मिनी बार है और दिन रात संगीत नाटक अकादमी के प्राणियो का दरबार है। अब वह लिखे नाटक, तोडे फाटक, रचे नाटक। (अट्टहास।)

दोनो आप कितने चालू है यानी दयालु है।

बोधिवक्ष (पश्चिमी और शास्त्रीय संगीत के साथ नाचता है) बाट के खाओ – छाट के खाओ—फाँट के खाओ—लेकिन कभी किसी को ना डाट के खाओ—खाओ तो लडो मती—दुविधा मे पडो मती। (अट्टहास) धरिये मन मे धीर—मत पीटिये लकीर—बढाते चले जाइये द्रोपदी का चीर—हलो मिसेज मागरेट, हाय बेनजीर—हाउ आर यू मेरे नेशन की तकदीर—मैं पीएम नही, फकीर—आरिजनल फकीर—डाईटिंग करता हूँ, खाता हूँ केवल सुजाता की खीर।

दानो सर, आपकी पोइट्री तो बेढव बनारसी—और अकबर इलाहाबादी स भी ज्यादा पावरफुल है।

बोधिवक्ष जो मर चुके हैं, उनके नाम मेरे सामने मत लो। (दाँत पीसकर) यह बतलाओ उन कवियो मे मेरा क्या स्थान है—जो जिन्दा हैं।

नकाब० एक जिन्दा तो कोई नहीं है, सर—

नवाब०-दो आपके सिवा।

बोधिवक्ष याद रखो, मेरी पोइट्री रि डिस्कवरी ऑव आर्यावत है।

नकाब० एक मैंने नोट कर लिया है, सर ! आपका यह वक्तव्य -

नकाब० दो आपके फोटो के साथ हम टीवी पर दिखलाएँगे !

बोधिवृक्ष मैंने टीवी को आजाद कर दिया है—उस पर कोई पाबंदी नहीं—वह मुझे खूब दिखलाए !

नकाब० एक जो आजाद था, आपने उसे बरबाद कर दिया है--

नकाब०-दो शट अप ! सॉरी सर जो बरबाद था, आपने उसे आजाद कर दिया है !

बोधिवृक्ष मेरी इच्छा है कि हर व्यक्ति का हृदय पटल ऐसा हो, मानो टीवी का परदा ! उस पर सब कुछ अंकित हो। न कोई भयभीत हो, न कोई शंकित हो ! मैं तो यह भी बतलाना चाहता हूँ कि चोंचों और गोंगों का पछाड़कर मैं प्रधानमंत्री कैसे बना ? मैंने देशवासियों को जानकारी का हक दिया है —वे जानें, मेरा सब कुछ जानें !

[मंच पर एक रहस्यमयी झिलमिलाहट उभरने लगती है।]

बोधिवृक्ष इधर आओ, मेरे पास ! मेरे कुछ आवरण उतारो ! ये झंडे ! यह कमरबंद, यह टोपी, ये मखमली जूतियाँ ! मुझे एक सघपशील यानी विनम्र, अपनी पूर्व भूमिका में आने दो ! (नकाबपोश उसके आदेश का पालन करते हैं) अब ठीक है। अब मैं क्लीयर कट देख रहा हूँ —इलाहाबाद—हैदराबाद—फरीदाबाद—समाजवाद और उग्रवाद !

[झिलमिलाहट बढ़ जाती है। राइफलें ताने, काले और लाले आते हैं और बोधिवृक्ष को घेरकर कोने में जम जाते हैं।]

बोधिवृक्ष (जेब से डायरी निकालकर) नकाबपोश नंबर वन एंड टू, यह मेरी डायरी है—तुम दोनों इसे पढ़ो ! इसमें अपने हरपक्षमीओं के साथ बिताई गयी चंद घड़ियाँ और मेरी

सूझ की लडियो का विवरण है—ऐन इपोर्टेंट डोक्यूमट ! तुम्हे इस 'रीड' करना है और पूरदश्य को 'फीड' करना है !

नकाव० एक,दो (डायरी लेकर पढ़ते हैं) मैं—मैंय—मुज्ने—वेऽऽ—व— अवे—व—मुये—कंडवरी—देवर—नही, नही किडनैप कर—लाला—ले—ले—गये !

नकाव० एक कितनी खराब हैंडराइटिंग है !

नकाव०-दो न पढी जाये आपसे न शेक्सपियर की मम्मी से, न वेद-व्यास के बाप से !

दोनो हे बोधिवक्ष, महाभारत मे सजय को मिले थे दिव्यचक्षु ! उसने सुनायी अधे धृतराष्ट्र को युद्धभूमि की कथा ! हमे भी दिये थे, आपने जीरो वाट क दिव्यचक्षु। किन्तु उनसे पढी नही जाती है आपकी लिखावट !

नकाव०-एक लगता है, बैटरी कमजोर हो गयी है।

नकाव० दो हे महाज्ञानी, हमारे बल्बो म वह अलौकिक आभा भर दीजिए—

नकाव०-एक जो सिफ आपके पास है —

नकाव० दो ताकि हम आपके अपहरण के आचरण—

नकाव० एक और व्याकरण को देख सकें, बखान सकें !

[बोधिवक्ष लपक कर दोनो के पास जाता है और उनके चूतडो को अपनी जूतियो से पीटता है।]

नकाव० एक,दो आह, खुल गये हमारे दिव्यचक्षु ! एक नये जेनरेटर से जोड दिया बोधिवक्ष न हमारी देह को ! मिला हमे अन्तर्ज्ञान ! अब हम कर सकते हैं गुप्त और सुप्त और लुप्त का भी लहरदार बखान !

बोधिवक्ष (वापस काके और लाले के बीच पहुँचकर राइफलें अपनी गदन से अडा लेता है) शुरू करो, कामचोर ! तुमने तो

दर्शकों को कर दिया बहुत बोर! अब न हड़बड़ाओ, न लड़खड़ाओ, यह दृश्य निपटाओ!

नकाब० एक हेरी आडियंस! वह रहे श्रीमान गुलजारसिंह कनातवाला—

नकाब० दो और वो रहे उनका अपहरण करने वाले दो आतंकवादी! टैरेरिस्ट!

नकाब० एक टैरेरिस्टों ने नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी से माँग की कि यदि कनातवाला की रिहाई चाहते हो तो मजनूं के टीले पर दस करोड़ पहुँचा दो—बहत्तर घंटे का अल्टीमेटम, यदि रुपया नहीं मिला तो उसके बाद कनातवाला खत्म।

नकाब०-दो एनडीपी में पीएम की पोस्ट के दो दावेदार थे—एक का नाम चाचो, दूसरा गोगो!

नकाब०-एक दोनों ने तुरंत स्टेटमेंट दिया—हमारी पार्टी को कनातवाला की कोई जरूरत नहीं। उसकी रिहाई के लिए नहीं देंगे हम दस करोड़! अलबत्ता उसे खत्म कर दिया जाय तो दे देंगे बीस करोड़!

नकाब० दो बयान पढ़ा आतंकवादियों ने! बीस करोड़ पाने के लिए वे कनातवाला को मारने की खातिर लपके!

[काले और लाले, बोधिवृक्ष को गोली से उड़ा देने का अभिनय करते हैं। आगे—नकाबपोश जो कुछ कहेंगे, वैसा ही 'दृश्य' बनते चले जायेंगे।]

नकाब० एक कनातवाला ने उन्हें समझाया—

नकाब०-दो पान मसाला खिलाया—

नकाब०-एक एक खाना बनाया—

नकाब०-दो और कहा—मैं वोट से आऊँगा—

नकाब०-एक नोट से आऊँगा—

नकाब० दो फाँट के खाऊँगा और आपको भी खिलाऊँगा, मेरी मदद कीजिए !

नकाब० एक कनातवाला ने उस खाने मे दो कुर्सियो को निमत्रित किया—

नकाब०-दो और कहा—सिर्फ बीस करोड के लिए मुझे मत मारो ! मेरे सग रहो और अरबो कमाओ ! बना रहे हमारा नाता—खोलो, बेफिक्र स्विस बैंक मे खाता !

नकाब० एक कनातवाला फुसफुसाकर बोले—हे आतकवादी !

नकाब०-दो लोकतत्र की चाह मन मे जगाओ !

नकाब०-एक जगलो मे मत भटको—

नकाब० दो शाहजहाँ माग पर कोठी अलाट कराओ और इक्कीसवी सदी मे जाओ !

नकाब० एक हे दर्शक ! कनातवाला की बातें सुनकर—

नकाब० दो आतकवादियो को अपनी गलती फील हुई—

नकाब० एक चुपचाप एक 'पकेज डील' हुई—

नकाब० दो फिर उन्होने कनातवाला के चरणो मे मत्था टेका—

नकाब० एक उन्हे बाइज्जत घर पहुँचाया—

नकाब० दो और इस तरह शाति और सद्भावना का माहौल बनाया !

नकाब० एक अगले रोज—

नकाब०-दो हाँ अगले रोज—

नकाब० एक कनातवाला ने की अपने मित्रो सलाहकारो की गुप्त सिटिंग !

नकाब० दो यह तय हुआ—

नकाब० एक कि अब तो हो एक जबरदस्त पब्लिक मिटिंग !

नकाब० दो खुली थली—

नकाब० एक और हुई बेजोड रैली !

नकाब०-दो क़नातवाला ने—क्या ही अइसा इस्पीच दिया

नकाब०-एक कि सब ससुरन—सईंयो अड्डया को खींच दिया !

नकाब० दो वो दहाड़कर, दशानन समान मुख फाड़कर, बोले—

नकाब० एक मुझे नहीं चाहिए प्रधानमंत्री का पद ।

नकाब०-दो मैं तो हूँ जनता के प्यार से लदफद और गदगद ।

नकाब० एक आपने मेरी पुकार पर भर दिया है रामलीला मैदान—तो सुनिये मेहरबान—

नकाब० दो सुनाता हूँ मैं आपको आपबीती, सच्ची कहानी ।

नकाब० एक कि मैंने कैसे उतारकर रख दिया आतंकवादियों का पानी ।

नकाब० दो सबसे पहले मैं यह रहस्य खोल दूँ—

नकाब० एक कि आपके दो स्वार्थी नेताओं ने—

नकाब०-दो चोरों और ठगों ने कराया—मेरा अपहरण ।

नकाब०-एक आतंकवादी पकड़ कर ले गये मुझे—पोकरण ।

नकाब०-दो आप जानते हैं—वहीं किया था इस देश के वैज्ञानिकों ने प्रथम आणविक परीक्षण ।

नकाब० एक भाइयो और बहनो, बिनाका गीत माला सुनने वालो मेरे भाइयो और बहनो ।

नकाब० दो आतंकवादियों ने मुझे धमकाया और डराया—

नकाब० एक यदि तुम प्रधान मंत्री की टेम्परेरी पोस्ट के लिए कंडीडेट बने—

नकाब० दो तो हम तुम्हें एटम बम से मार देंगे

नकाब० एक नापाम बम और क्या कहते हैं वो, हाइड्रोजन बम से मार देंगे ।

नकाब०-दो मैंने सीना तान कर कहा—

नकाब० एक मुझमें पद-लालसा के इतने आक्सीजन सिलंडर भर पड़े हैं—

नकाब०-दो - कि मैं किसी हाइड्रोजन बम से नहीं मर सकता !

नवाब०-एक तब उन्होंने मुझे थ्रेट किया—

नकाब० दो हम तुम्हें विदरा स्वामी के तंत्र से, मंत्र से, षडयंत्र से मरवा देंगे !

नकाब० एक पिनाका मीत माला के भाइयो और बहनो, तब मेरी रगों मे फ्लड आ गया—

नकाब०-दो सारे बांध तोडकर बहने लगा पद प्राप्ति का जोश !

नकाब०-एक आरम्भ हुआ एक फ्रीस्टाइल जंग—

नवाब०-दो देवता तो देवता, राक्षस तक रह गये दंग !

नकाब० एक टेरेरिस्ट सोचते थे कि मुझे आदत है, मैं कर जाऊंगा वाक आउट !

नकाब०-दो लेकिन मैंने ढिशू ढिशू कर—लंगोटफाड, दाढीउखाड और—

नवाब०-एक धोबीपछाड दांव से—

नवाब०-दो उन्हें ही कर दिया नॉक आउट !

नवाब० एक लडते-लडते मैंने याद किया सुखदेव बच्चन को, ग्रमजद खान को—

नकाब०-दो महाभारत के भीम को, धीरूमल-पेटपीरूमल हकीम को—

नकाब० एक यूज किया कुचिपुडि और कराटे—

नकाब० दो इस तरह मैंने टैरेरिस्टो के सारे दाँव काटे—

नवाब०-एक उन्हें बनाया बेहोश और फिर ताल ठोकता हुआ—

नवाब०-दो माल चाखता हुआ —

नवाब०-एक चला आया हूँ आपके सामने और विनती करता हूँ—

नवाब०-दो कि हे परमात्मा, अब मेरे देशवासियो को सद्बुद्धि दे—

नवाब०-एक मुझे तो हमेशा जनसेवा का मार्ग अपनाना है—आपकी ही शरण में आना है !

नकाब०-दो (गाता है) मुसाफिर हूँ यारो, ना घर है, ना ठिकाना, मुझे चलते जाना है !

[नेपथ्य में तालियाँ ही तालियाँ और कोलाहल—'हम गुलजारसिंह कनातवाला को प्रधानमंत्री बनायेंगे ! हम एक दिलेर और बहादुर प्रधानमंत्री चाहते हैं, जो रोज ढिशू-ढिशू कर सके ! कनातवाला—जिंदाबाद ! देश का नेता कैसा हो, कनातवाला जैसा हो !'

दृश्य लोप।

कुछ क्षणों का विराम। फिर नगाड़ा बजता है। फिर अन्य वाद्यों का मिला-जुला भारी शोर। कालें—लोकनतक, लाले—डिस्को-डासर, नीनी—स्ट्रीट सिंगर और छीछी—नर्तकी के वेश में खूब ऊधम-उत्पात मचाते हुए प्रवेश करते हैं। उनके हाथों में बैनर है—'अपना उत्सव', 'फेस्टिवल ऑव आर्यावर्त', 'कॉमेडी में रोना है' 'ट्रेजडी में हँसना है।']

गायन मिले सुर मेरा तुम्हारा
तो उत्सव चले हमारा !
पीएम पहुँचे लक्षद्वीप में
न्यू इयर ईव मनाएँ—
सारे सुर अब बेसुर होकर
गंगा में मिल जाएँ,
गंगा का जल हो खारा—
तो उत्सव चले हमारा !

रा, दया तोप स मारा—
नीद के माऽरे

छीछी मया न हाय मुझे ताप म म माऽरे
म गुलजार का बुलाय ला हाय डडी—नीद के मारे
ताऊ को उठाय ना नीद

नीनी हाय चाचा न नीद न मार मे बुलाया
हाय बापू, नीद क माऽरे

छीछी नाना न हाय मुझे मिनिस्टी नीद के मारे
अपने चरण म बुलाया— नीद के मारे

नीनी मैं खाना ना धरना आया, नीद के मार
आटी की मौज नगाय आयी नीद के मारे

कारे हाय अतना बडा महरबान नीद के मारे

लाले हाय जय जवान जय किमान नीद के मार

छीछी जय वाकी छारी सावधान

नीनी अय छार आजा कदरदान

[चारा नाच र है। तज, और तेज। और तज। चाचा अ गोगा, बोधिवृक्ष को अपने कधा पर उठा कर नाते है। बोधिवक्ष पूरे ठाठ बाट न मा, ध्यानमग्न, सचित्र लोक-शास्त्र पढ रहा है। चोचो ने अपनी बायी और गागा न दा आख पर काली पट्टी बाध रखी है।]

बोधिवक्ष वाट इज दिस ! हम क्या किया जा रहा है ? हम शास्त्र पढना चाहते है। वद पुराण और शास्त्र ! इफ आय ल रोड शास्त्राज आय ल नीड—नेशन !

चाचा यार तकलीफसी यह नाटकरा का नया नाटक है। इसमे आपकी प्रशस्ति की गयी है। पकी उपलब्धियो का डिग-डाग मामापाग वणन है ! इस ड्रामा ब्रामा

का?

गोगो ऽऽराष्ट्रनेता काऽऽऽ राष्ट्रपव उफऽऽऽ हिमालय काऽऽगव ऽऽ उफ अधेर नगरीऽऽऽ उफऽऽ अजातशत्रु उफऽऽ आधे अधूरेऽऽ उफ खेलाऽऽऽ पोलमपुरऽऽऽ बोलोऽऽऽ बोधिवृक्ष !

बोधिवृक्ष इतना लंबा टाइटल !

चोचो योर एक्सीलेंसी, शीर्षक तो छोटा ही है, किन्तु इसके हकलाने की वजह से लंबा हो गया है !

गोगा नो सर, ऽऽऽचोचो आपकोऽऽ मिसइन्फारमेशनऽ देकर ऽऽमिसगाइड कर रहा है, ऽऽऽटाइटल इसलिएऽऽऽ लंबा है ऽऽक्योंकि नाटककारऽऽऽ आपकी तारीफ केऽऽऽ लंबे-लंबे ऽऽ पुल बनानाऽऽ चाहता है !

चोचो योर एक्सीलेंसी, यह बंदा एक डायलाग बोलने में इतना टाइम लेता है ! इस तरह तो नाटक पाँच घंटे में खत्म होगा। इसे कोई संवाद मत बोलने दीजिए।

बोधिवृक्ष एवरी बड्डी कैन स्पीक आइ हैव गिवन टु ऑल फ्रीडम ऑव एक्सप्रेशन !

गायन मिले सुर मेरा तुम्हारा
तो नाटक चले हमारा
बोधिवृक्ष की डाल-डाल में पात, पात में पात
एक घात में कोटि घात आघात सहज उत्पात
मोरी चुनरी में सब रंग डारा
मिले सुर मेरा तुम्हारा

काके, छीछी भय प्रगट कृपाला सनातवाला बोधिवृक्ष हितकारी !

लाले, नीनी हम माइकेल जैक्सन - मडोना के फॉलो रर—

काके अनुयायी—

छीछी शरण तिहारी !

नीनी (मेडोना की तरह गाती हुई) हूज दैट गलऽऽऽ

बोधिवृक्ष (नीनी की ओर आकर्षित) हूज दैट गल ! अगर यह लडकी इस नाटक मे है तो—है तो मेरा शास्त्र पढ़ना सार्थक है !

चाचो प्रधानमंत्री जी को सब कुछ दिखलाया जाये ! खोल कर। टटोल कर। हर दृश्य ! (बोधिवृक्ष से) योर एक्सीलेंसी ! (नीनी की ओर इशारा कर) इस लडकी का प्रेस के साथ अच्छा रैपट है—यही छपवाती है आपके बडे बडे फोटो ! (छोछी की तरफ संकेत कर) और यह, एकदम फ्लर्ट है। विदेशी दूतावासो मे जाती है उनके थ्रू कामनवेल्थ कंट्रीज और नॉन एलाइन्ड बन्ड मे आपकी इमेज बनाती है, राजदूतो को शास्त्र पढाती है और उनसे बहुत काम की सूचनाएँ लाती है !

बोधिवृक्ष वेरी गुड आइ'म है—हैप्पी ! इस बार जब मैं फॉरिन टूर पर जाऊँगा, दोनो को अपने साथ ले जाऊँगा—

चाचो चूंकि पीएम की दिलचस्पी फॉरिन अफेयर्स मे ज्यादा है इसलिए हे नये नाटक के पुराने कलाकारो तुम विदेश नीति से ही शुरू करो !

कार्य (आलाप लेकर) आऽऽऽ है फारेन पालिसी का मतलब—

छोछी हो अच्छे संबंध पडोसी से—

लाल पडोसिन से !

काश मेरे सामने वाली खिडकी मे, एक चाँद-सा मुखडा रहता है—

लाल वो नए पीएम को देख-देख, कुछ उखडा उखडा रहता है !

नीना छैना आवे आधी रात, बँटावे चटनी ! (नाचती है।)

लाल मेरी एमी पडोसिन से नहीं पटनी ! (नाचता है।)

कार वन—टू—थ्रीईईई—

छीछी उसम से निकला एलटीटीई—
नीनी बैठ के गाया रब रब्बो, रब रब्बो
लाल जलने लग गया कालजो !
काके जय श्री पशुपतिनाथ जय महाराज की !
नीनी यू विल मी माई आडिएसजो —
लाले, छीछी हम एसी-तसी करने वाले है नपाल की ! (नाचते हैं।)
काके तुम राजा भूटान के, मैं राजा हिन्दुस्तान का—
लाले छोडो अपनी शान प्यारे, क्या करोगे शान का !
नीनी वी डोंट वाट टु गिव यू एनी थिंग—
छीछी लाग लिव किंग, लाग लिव किंग !
काके, नीनी आमार सोनार बागलादेशी—
छीछी आपनि कोमोन आछेन ?
लाले, काके, नीनी खा गये मच्छी भात वेशी, आमार सोनार बागला देशी !
छीछी बर्मा ने सीखा है नया-नया जूडो !
लाले, काके, नीनी, छीछी आओ खेलें लूडो, आओ खेलें लूडो ! (नाचते हैं।)
चाचो तो हो गया है सिद्ध—(इस बीच बोधिवृक्ष सो गया है और उसके परों का सिरहाना बना कर गोंगों भी) सो गया है गिद्ध—और गिद्ध का भोजन—लेकिन हम चालू रखें अपना आयोजन ! तो हो गया है सिद्ध—कि दुनिया म— पडोसियो मे, हमारे भाव ऊँचे ह !
काके, लाले इसीलिए तो बाजार मे भी चीजो के भाव दुगन ऊँच हैं !
नीनी मिले न शक्कर लोकतत्र का स्वाद चक्खो !
छीछी लो मिट्टी का तल, हिंसा जारी रक्खो !
काके जाग उग्रवाद जाग, दिल को बेकरार कर—
लाले छेडके गोलियो का राग जाग उग्रवाद जाग !

नीनी छीछी आया आया विश्वामित्र ऋषि—कृषि, कृषि, कृषि !

चोचो हमने जोडा है नेताओं, उच्च अधिकारियो और उद्योगपतियो को खेती मे—

बोधिवृक्ष (सहसा जाग कर) हम चाहते हैं कि वे मेहनत करें !

चाचो योर एक्सीलसी, आपने उन्हे बडे बडे फार्म एलॉट कर दिये—

बोधिवृक्ष आइ विश—कि उनके हर फार्म मे—एक स्वीमिंग पूल, एक टेनिस कोर्ट, एक बियरहाउस, एक सेंटर आव पोर्नोग्राफी जरूर हो—ताकि किसानो की उकताहट दूर हो !

गोगा SSS यानीSSS किसानो का एकSSS नया वर्गSS बनाया गया और उनकेSS खेतो मेSS स्वर्गSS बसाया गया !

काके, लाने, नीनी, छीछी इधर धसान, उधर धसान—कहाँ है रोटी, कहाँ है कपडा, कहाँ मकान !

चोचो जाके देखो—डीडीए की, जीडीए की, पीडीए की, सीडीए की नयी-नयी कॉलोनियाँ !

काके लेकिन लोग उनमे रहना पसन्द नही करते !

गोगा SS यह तो SS ऐंटी-नेशनल SSS हरकत है !

नीनी ज्यो ही घुसे मकान मे, मकान गिर गया धड़ाम धम !

छीछी मुनुआ, इसी तरह होगी अब मुल्क की आबादी कुछ कम !

नीनी एक तीर से दो निशान—

छीछी वाह रे, ओ आवास मिनिस्टर ऐंचकताने !

चाचा कन्फ्यूजन मत फैलाओ ! असल मे लोग पर्यावरणवादी होते जा रहे हैं। वे मकानो मे नही खुले आसमान के नीचे रहना पसन्द कर रहे हैं। वे राष्ट्र की बचत मे सहयोग दे रहे हैं।

गागा SSप्रकृति के साथSSS संबंध बनायेऽ रखने के लिए हीSS लोग आजकलSS रोटी यानीSS ब्रेड नहीSS खाते, SSघासफूस SS चरते है —इससेSSS ब्लडप्रेशरSSS ठीक रहता हैSS वजनऽऽ कंट्रोल में रहता है !

चाचो कपड़ा बहुत है। दुकानों में भरा पड़ा है कपड़ा - लोग खामखा करते हैं लफड़ा —अरे भई, खरीदिये और पहनिये! अब आपकी खरीदने की औकात नहीं है तो हम क्या करें ?

काके, लाल नीनी छीछी हरे कृष्णा हरे रामा, हरे कृष्णा हरे रामा— महँगाई का अपना उत्सव, करप्शन का फोकडामा—हरे कृष्णा हरे रामा !

चाचो सरकार ने मजदूरों को मालिक बना दिया है—कारखानों मा। अब वे मशीनें चलाना छोड़ कर प्रोजेक्ट रिपोर्ट और बलेंस शीट देख रहे है—

काके इस मगजपच्ची से चकरा रहे हैं—

लाल एक दूसरे मे टकरा रहे है !

चाचा हम नौजवानों को भेज रहे है लंदन, टोरंटो, वास्टन, बरमें ! उनकी नियति को दिया जायगा सदा बढ़ावा !

बोधिवक्ष वस्तुत वे ही जीतेंगे नोबल प्राइज—इसलिए हम कर रहे है युवा शक्ति का चैनलाइज ! जो रह जाएँगे देश में, हम उन्हें ढूँढ कर भेजेंगे प्रदेश में—वे ही हमारे इलेक्शन एजेंट बनेंगे—हर मतपत्र की लंबाई नापेंगे—और धड़ाधड़धड़ाधड़धड़ाधड़ बूथ छापेंगे !

[काके, लाले, नीनी और छीछी इस तरह *बैठ जाते हैं—मानो, मानो प्रेम कार्फ्रेंस* चल रही हो !]

तुम्हारा—तो शासन चले हमारा !

चाचा जो बोलें, परधान मतरी—

गागा ऽऽऽ लेखक वो ही लिक्खे ।

चाचा जैसा जो टीवी दिखलाय—

गागा ऽऽऽ वैसा सबको दिक्खे—

बोधिवक्ष जैसा जीव उसके आगे वैसा ही डालें चारा—मिले सुर मेरा तुम्हारा—

चाचा, गागा तो शासन चले हमारा, टूटा रथ चले हमारा !

[अचानक सब ठठाकर हँस पड़ते हैं और गाते-नाचते हुए नाटकीय वेश उतारने लगते हैं।]

गायन सैंया न हाय मुझे नाटक से मारा—
हास्य डायलॉग से मारा—
मैं दर्शक का पटाया लायी, नींद के मारे
और सबको ही उसासाय आयी, नींद के मारे !
यह नाटक का अंत—हाँ हाँ यह नाटक का अंत
इसमें सब कुछ मनगढ़न्त !
काहेलसी नहीं करें, सीरियसली विचारें—
कथावस्तु—घटनाओं और भूमिकाओं में असत्य का प्रसार !
आ प्रसार भारती नमो नमः
हम करें आरती नमो नमः
क्यों हम मारती नमो नमः
गाथा बुरा न मानिये—बुरा दर्शक बना हाय
बुरा जो देखन मैं चला—मुझसे बुरा न कोय
आ सदस्य सुस्वागतम् स्वाहा राम भरोसा स्वाहा !

'बोलो बोधिवक्ष' के टिक्ट वेचने वाला—टिकटफरोश स्वाहा !
सैंया ने हाय मुन्ने वोट क्लब पे मारा
हाय बोल-बोल के मारा, फिर रगशाला मे मारा
मैं 'दि एड' छपवाय लायी, नीद के मार
सब लाइट और माइक 'आफ' कराय आयी, नींद के मारे !

॥ इति शुभम् ॥



मणि मधुकर

का

अगला नाटक

।। खारी बावली ।।

(शीघ्र प्रकाश्य)



आज के बहु मथित और चर्चित
रचनाकारों के लिए हम लिखें

लिपि प्रकाशन
1, अन्सारी रोड [illegible] दरियागंज,
नई दिल्ली 110002

॥ मणि मधुकर ॥ रसगधव, खेला पोलमपुर, दुलारी वाई, बुलबुल सराय और इकतारे की आख जैसे बहु-मचित एव बहुआयामी नाटकों के बहु-समादृत नाटककार ॥

॥ केन्द्रीय साहित्य अकादमी के सर्वोच्च पुरस्कार स सम्मानित ॥ 'रसगधव' पर मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् का सेठ गोविददास पुरस्कार उत्तर प्रदेश हिन्दी सस्थान एव दक्षिण साहित्य सगम कर्नाटक से भी पुरस्कृत ॥ 'बुलबुल सराय' पर महाराष्ट्र नाट्य मडल का मामा वरेरकर पुरस्कार ॥ अधिकाश नाटका का मराठी, कनड, बगला, गुजराती, पजाबी आदि विभिन्न भारतीय भाषाओ मे अनुवाद ॥ एकाकी-सग्रह सलवटो मे सवाद ॥

॥ उपन्यास सफेद मेमने, पत्तो की बिरादरी, पिजर मे पन्ना, मेरी स्त्रिया ॥

॥कहानी-सग्रह हवा मे अकेले, एकवचन-बहुवचन, स्वमय माता, चुपचाप दु ख, ह भानमती, चुनिदा चौदह भरतमुनि के बाद ॥

॥ कविता-सग्रह खड खड पाखड पव, घास का घराना, बलराम के हजारो नाम ॥

॥ सस्मरण सूखे सरोवर का भूगोल, उडती हुई नदिया भुने हुए प्रेम का स्वाद ॥

॥ सकलन पिछला पहाडा ॥ सपादन अपने आसपास, भुविसुरम ॥

॥ राजस्थानी भाषा म लेखन पगफरो, बावन भर, सुरपुर छीम्भर, आणस-छापमे, मुरट भाखर, आडा ठाडा, रातवासो आदि कृतिया ॥

॥सप्रति दिल्ली से नेशनल प्रेस इंडिया के कार्यकारी अध्यक्ष ॥